

में स्तुति , सत्र 2

3 अक्षर

© 2024 टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट साल्टर की पुस्तक ॥ में ईश्वर की स्तुति पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या दो है, भजन के तीन पात्र, राजा, भजनकार और शत्रु।

स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में भगवान की स्तुति पर हमारे दूसरे सत्र में आपका स्वागत है।

इस सत्र में, हम स्तोत्र की पुस्तक के तीन प्रमुख पात्रों और विशेषकर स्तोत्र की पुस्तक ॥ के तीन प्रमुख पात्रों का परिचय देने जा रहे हैं। वह स्वयं राजा, याचना करने वाला, या भजनहार होगा, और फिर शत्रु होगा। हम देखेंगे और देखेंगे कि वे कैसे बातचीत करते हैं और फिर वे सभी महान राजा की प्रशंसा की ओर ले जाते हैं।

तो, हम स्तुति की धारणा पर वापस आएंगे, स्तोत्र की पुस्तक ॥ में ईश्वर की स्तुति। तो ये हैं तीन मुख्य किरदार। लेकिन इससे पहले कि हम ऐसा करें, मैं बस थोड़ा सा अध्ययन करना और समीक्षा करना चाहता हूँ कि हमने पिछली बार क्या किया था।

इसलिए पिछली बार हम पुस्तक ॥ के विहित संदर्भ पर गए थे और हमने मूल रूप से देखा था कि स्तोत्र को पेंटाटेच की तरह मोज़ेक टोरा से मेल खाने वाली पांच पुस्तकों में विभाजित किया गया था। अध्याय 1 से 41, अध्याय 42 से 72, यही हमारी पुस्तक है। और इसलिए, यह वह है जिसकी हम आज जांच करने जा रहे हैं और पुस्तक ॥ में भगवान की स्तुति के लिए।

पुस्तक ॥ भजन 73 से भजन 89 तक है और फिर पुस्तक IV 90 से 106 तक है और 107 से 150 तक भजन का अंत और 150 अध्याय हैं। दरअसल, भजन पुराने नियम की बाइबिल की सबसे लंबी किताब नहीं है। भले ही इसमें 150 अध्याय हैं, यिर्मयाह वास्तव में लंबा है क्योंकि भजन संहिता में कई अध्याय बहुत छोटे हैं और यिर्मयाह में कई अध्याय विशाल हैं।

दूसरी बात, हमने उनके बीच संबंध दिखाना शुरू कर दिया। हमने देखा कि इसकी शुरुआत भजन जोड़ी से होती है, ठीक उसी तरह जैसे भजन 1 और 2 एक जोड़ी के रूप में एक साथ चलते हैं। भजन 1 और 2 पूरे भजन के लिए एक जोड़ी के रूप में चलते हैं।

तो, भजन 42 और 43 एक साथ चलते हैं और वे दोनों विलाप करते हैं। और मूल रूप से उन्हें जो ताना मारा जाता है वह यह है कि तुम्हारा भगवान कहां है? और फिर प्रतिक्रिया अगले भजन में आती है जहां सिय्योन प्रस्तुत किया गया है। मूलतः, परमेश्वर सिय्योन में परमेश्वर के नगर यरूशलेम में है।

और वहाँ कई सिय्योन गीत हैं जो इस प्रश्न का उत्तर देते हैं, कि आपका ईश्वर परिचयात्मक भजनों से कहाँ आ रहा है। पुस्तक की शुरुआत में विलाप से लेकर पुस्तक के अंत में प्रशंसा तक एक

सामान्य आंदोलन था। और हमने देखा कि यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा स्वयं भजन, संपूर्ण भजन, जहां आपके पास प्रारंभिक अध्याय, अध्याय 3, 4, 5, 13, आदि हैं।

प्रारंभिक भजनों में बहुत सारे विलाप हैं। और फिर बाद में भजन संहिता की पुस्तक में भजन 145 से 150 तक कहा गया है, वे सभी भजन हैं, भगवान की स्तुति के भजन। वास्तव में, स्तोत्र का अंत हलैलुयाह शब्द से होता है, जो प्रभु की स्तुति है।

यह भजनों को जोड़ियों में जोड़ना है, और हम यहां भजनों के बीच अंतरपाठीय संबंधों पर काम कर रहे हैं। मोटे तौर पर हम जेरी विल्सन नाम के एक व्यक्ति पर काम कर रहे हैं, जिसने अस्सी और नब्बे के दशक में मूल रूप से यह धारणा विकसित की थी कि भजन एक-दूसरे से जुड़े हुए थे और भजनों को अंतः पाठ्य रूप से पढ़ने के लिए दरवाजे खोलने में कुछ शानदार काम किया था। इसका मतलब है एक भजन की दूसरे से तुलना करना और यह दिखाना कि वे एक साथ कैसे जुड़े हुए हैं और प्रत्येक भजन को एक अलग भजन के रूप में लेने के बजाय हमें एक बड़ा संदर्भ दे रहा है।

तो, जेरी विल्सन के काम का अनुसरण डेविड हॉवर्ड और कई अन्य लोगों, मैक्केन और मैक्केन और अन्य लोगों ने किया है। और इसलिए हम केवल इन दोनों को दिखा रहे हैं जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वहाँ सिय्योन भजनों का एक समूह है।

वहाँ दोनों हैं, पिछले कुछ हफ्तों में हमारा एक बिल्कुल नया लेख सामने आया है जिसमें मास्किल्स भजन संहिता 52 से 55 को एक साथ जोड़ रहे हैं। मास्किल्स खत्म होने के ठीक बाद, एक मिकतम अनुभाग है। फिर, हम नहीं जानते कि मिकतम का क्या अर्थ है, लेकिन यह सिर्फ इतना है कि इसका अनुवाद नहीं किया गया है, लेकिन ये भजन मिकतम के रूप में जुड़े हुए हैं।

और फिर भजनों की एक श्रृंखला है, 64 से 68 तक भजन हैं, 56 से 60 मिकतम हैं। और फिर भजन 71 और 72 डेविड से यह संक्रमण है जो कमजोर और कमजोर है, भजन 71 से बदलाव में 1 राजा 1 की तरह है जहां डेविड कमजोर, कमजोर और बूढ़ा है, भगवान से प्रार्थना कर रहा है कि वह उसे बुढ़ापे में न छोड़े। दाऊद के पुत्र सुलैमान की शक्ति। सुलैमान, मन्दिर का निर्माता, सुलैमान, दाऊद का पुत्र।

क्या वह परिचित लगता है? मन्दिर के निर्माता, इस मन्दिर को नष्ट कर दो और मैं, दाऊद के पुत्र, तीन दिन में इसे खड़ा कर दूंगा। और इसलिए, यहाँ अंत में यह परिवर्तन और फिर डेविड की प्रार्थनाएँ समाप्त हो जाती हैं। भजन 72 हमारी किताब को समाप्त करता है और तीसरी किताब शुरू करता है।

हमने देखा कि वहाँ दूसरा डेविडिक संग्रह था। पहली किताब में एक डेविडिक संग्रह है, अध्याय तीन से 41 तक। और फिर यहां दूसरा डेविडिक संग्रह है, लेकिन यह पूरी किताब नहीं है।

कोरह के पुत्र हैं और उन्होंने भजन 42 से 49 तक लिखा है। कोरह के पुत्रों को शीर्षकों में अंकित किया गया है। और इसलिए, यहां विभिन्न तत्व हैं।

सुलैमान ने भजन 72 लिखा है। इसलिए, यहाँ कई और लोग काम कर रहे हैं क्योंकि संपादक भजन की पुस्तक को एक साथ रख रहे हैं। अब स्तोत्र की पुस्तक डेविड के समय से लेकर विदेशी स्तोत्र के समय तक की है, जहाँ हम 400 वर्षों के बारे में बात कर रहे हैं जब स्तोत्र एक साथ आया और एक साथ रखा गया था।

इसलिए, 400 वर्षों की अवधि में इन पुस्तकों को एक साथ संपादित करने वाले कई संपादकों द्वारा इस पर काम किया जाएगा, जैसे कि भजन एक साथ आए थे। हमने देखा कि वहाँ वह था जिसे एलोहिस्टिक स्तोत्र कहा जाता है। एलोहिस्टिक स्तोत्र भजन 42 से 83 है, जो पुस्तक 3 में थोड़ा सा आता है।

और हमने जो देखा वह यह था कि पुस्तक 1, पुस्तक 4, और पुस्तक 5 यहोवा या भगवान के नाम के पक्ष में छह से एक की तरह हैं। जब हम एलोहिस्टिक स्तोत्र 42 से 83 तक आते हैं, तो एलोहिम छह से एक तक प्रमुख होता है। तो, आपके पास पुस्तक 1, 4, और 5 में यहोवा के नाम के उपयोग का समर्थन है।

और फिर पुस्तक 2 में, मोटे तौर पर पुस्तक 2 में, लेकिन फिर पुस्तक 3 में थोड़ा सा एलोहिम छह से एक का पक्षधर है। और हमने कहा, मूल रूप से हम भजन 14 और 53 को देखकर यह साबित करते हैं। ये बिल्कुल समानांतर, लगभग समान भजन हैं।

मूर्ख ने अपने मन में कहा, कोई परमेश्वर नहीं है। और फिर हमने देखा कि जबकि यह 14 में यहोवा कहता है, 53 में इसे तीन बार ईश्वर, एलोहिम में बदल दिया गया, जिससे पता चला कि जब उन्होंने इन भजनों को एक साथ रखा था, तो कोई उस संबंध में ईश्वर के नाम के साथ काम कर रहा था। तो पिछली बार हमने यही किया था।

अब इस बार हम जो करना चाहेंगे वह है स्तोत्र के तीन मुख्य पात्रों का परिचय कराना। और हमारे पास यहां जो है वह यह है कि हम राजा के साथ शुरुआत करने जा रहे हैं। अब राजा अधिकांशतः दिव्य ही होगा।

हम राजा के रूप में ईश्वर के बारे में बात करेंगे, लेकिन भजन 45 में एक मानवीय तत्व भी है और भजन 72 में, मानव राजा के बारे में बात की जाएगी। भजन 45 राजा का विवाह होगा और भजन 72 राजा के रूप में सुलैमान होगा। तो फिर आपके पास यह है कि जब तक हम यहां हैं, मुझे बस एक और टिप्पणी करने दीजिए।

राजा की यह धारणा, हम पुराने नियम में रूपकों के बारे में बात कर रहे हैं। डॉ. डार्को, जिनके साथ मैं न्यू टेस्टामेंट में पढ़ाता हूं, ने एक बहुत ही दिलचस्प अवलोकन किया है कि न्यू टेस्टामेंट में, भगवान के लिए मुख्य रूपक यीशु के मुंह से पिता का आना है, उन्हें पिता कहना, हमें प्रार्थना करना सिखाना, हमारे पिता। और यह भी कि हम बच्चे हैं, हमें ईश्वर की संतान कहा जा सकता है।

और इसलिए, नए नियम में ईश्वर के लिए पिता एक बहुत बड़ा रूपक है। पुराने नियम में, राजा पुराने नियम में ईश्वर का प्रमुख रूपक है। आपकी कई धार्मिक परंपराएँ ईश्वर की संप्रभुता, ईश्वर

के राजात्व से संप्रभु के रूप में बाहर आने, दुनिया पर शासन करने, इज़राइल पर शासन करने, ब्रह्मांड पर शासन करने के बारे में बात करती हैं।

राजा, महान राजा ने अपनी वाचा दी। और हम अनुबंधों के बारे में बहुत बात करते हैं, पुराने नियम में तीन प्रमुख अनुबंध, इब्राहीम, सिनैटिक और डेविडिक अनुबंध। और वह सब राजा से निकलता है।

राजा अपनी प्रजा के साथ एक वाचा बाँधता है। तो, राजा एक बहुत बड़ा रूपक है और वह रूपक सीधे भजन संहिता की पुस्तक में चला जाता है। और इसलिए, हम स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में राजा की धारणा और उस रूपक का पता लगाना चाहते हैं।

अब राजा के बाद, हमारे पास भजनहार या याचक भी है। अब प्रार्थी कौन है? अनुपूरक क्या है? याचक वह है जिसे ज़रूरत है, कोई ऐसा व्यक्ति जिसे ज़रूरत है, जो मदद की गुहार लगाते हुए भगवान के पास आता है। तो, एक प्रार्थनाकर्ता मूल रूप से वह है जो मदद की याचना करता है, भगवान से याचना करता है, शायद याचना करता है।

दरअसल, यहां भी विलाप, विलाप और मदद के लिए भगवान से प्रार्थनाएं होने वाली हैं। और इसलिए यह भजनहार की भूमिका होगी। और फिर वहाँ शत्रु है और शत्रु शामिल हो जाता है और शत्रु को स्तोत्रों की पुस्तक में बहुत अच्छी तरह से परिभाषित किया गया है।

और इसलिए, हम इस शत्रु पर एक नज़र डालना चाहते हैं और यह भी देखना चाहते हैं कि शत्रु कैसे बातचीत करता है। और हमारे यहाँ जो कुछ है वह यह है कि शत्रु भजनकार को षड़यंत्र रचेगा, चिढ़ाएगा, हानि पहुँचाएगा, निगल जाएगा, फँसाएगा और लज्जित करेगा। तो, शत्रु अपने कार्यों को भजनहार पर निर्देशित करेगा।

फिर भजनहार जो मार-पीट, धमकाया जाना और इस तरह की चीजें महसूस कर रहा है। भजनहार तो ऐसा ही करेगा, इसलिए शत्रु उसके विरुद्ध षड़यंत्र रचता है और भजनहार को फँसाने की कोशिश करता है। तब भजनकार विलाप करेगा, और परमेश्वर से प्रार्थना करेगा, और प्रार्थना करेगा, और परमेश्वर से बलिदान मांगेगा, और कहेगा, हे परमेश्वर, मेरी सहायता कर।

दुश्मन मुझे मार रहा है और बस मुझे नष्ट करने की कोशिश कर रहा है। तब दिव्य राजा, उसकी भूमिका बचाने, उद्धार करने, बचाव करने, रक्षा करने और न्याय प्रदान करने की होगी। तो दिव्य राजा नीचे आता है और मूल रूप से भजनकार को बचाता है और बचाता है।

और वह मूल रूप से दुश्मन के खिलाफ लड़ता है और उसे हराता है, दंडित करता है और उसके खिलाफ न्याय करता है। इसलिए दिव्य राजा उस शत्रु के विरुद्ध न्याय करेगा जो भजनकार के साथ बुरा कर रहा है। और मूल रूप से यहां भजनकार को बचाया जाएगा, उद्धार किया जाएगा और बचाया जाएगा, और उसकी रक्षा की जाएगी, जिसके बाद भजनकार बलिदान और प्रशंसा के साथ जवाब देगा।

तो, महान राजा द्वारा उसे छुड़ाने के बाद जो प्रतिक्रिया होगी वह बलिदान और परमेश्वर की स्तुति होगी। और यहीं से प्रशंसा आती है, स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में प्रशंसा। और इसलिए अब हम जिस पर चर्चा करने जा रहे हैं वह एक प्रकार का प्रारूप है।

और हम एक के बाद एक इनसे गुज़रने का प्रयास करेंगे। तो सबसे पहले हम क्या देखना चाहते हैं, हम राजा को, राजा को एक रूपक के रूप में लेने जा रहे हैं। दिव्य राजा एक रूपक है।

हम अध्याय 45 और 72 में मानव राजा के बारे में बहुत कुछ नहीं करने जा रहे हैं, लेकिन हम राजा पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं। राजा, जैसा कि हमने कहा, स्तोत्र में भगवान के लिए प्रमुख रूपक है। और साथ ही, मैं पूरे पुराने नियम में सुझाव दूंगा।

तो, राजा, भगवान को राजा के रूप में चित्रित किया जाता है, वह बहुत बड़ा है। और मैं जो करने जा रहा हूँ वह यह है कि मैं आपको कुछ छंद पढ़ने जा रहा हूँ जो इनमें से अधिकांश स्लाइडों के शीर्षक को साबित करते हैं। और इसलिए, मैं आपको छंदों की एक श्रृंखला देने जा रहा हूँ।

तो, यह किसी भी तरह, बस एक सूची की तरह हो सकता है। मैं इन छंदों का उपयोग प्रमाण के रूप में यह साबित करने के लिए कर रहा हूँ कि स्तोत्र की पुस्तक में दैवीय राजत्व रूपक एक प्रमुख है। तो मैं बस इन्हें पढ़ूंगा।

और मैं जो करूंगा वह यह है कि जैसे ही मैं क्लिक करूंगा, मैं आपको प्रत्येक छंद का सारांश दूंगा क्योंकि मैं स्वयं सभी छंदों को पढ़ूंगा। तो यहाँ अध्याय 44 श्लोक चार और पाँच में, आप मेरे राजा और मेरे भगवान हैं। और तुम मेरे राजा और मेरे भगवान को वहाँ समानांतर रूप में होते हुए देख सकते हो।

और इसलिए, तुम मेरे राजा हो. और तो और, आप भगवान हैं. इन श्लोकों में तीन चरित्रों का उल्लेख किया गया है।

तो चलिए मैं आपको ये पंक्तियाँ पढ़कर सुनाता हूँ। स्तोत्र 44 पद चार और पांच, तू मेरा राजा, मेरा परमेश्वर है, जो याकूब के लिये विजय की आज्ञा देता है। आपके माध्यम से हम अपने शत्रुओं को पीछे धकेलते हैं।

तो, आपने देखा कि भजनकार दिव्य राजा के स्थान पर शत्रुओं को पीछे धकेल रहा है। तेरे नाम के द्वारा हम अपने शत्रुओं को रौंदते हैं। अध्याय 44 श्लोक आठ में, केवल तीन श्लोक बाद, यह कहता है, परमेश्वर में, हम दिन भर अपनी बड़ाई करते हैं और हम सदैव तेरे नाम की स्तुति करते रहेंगे, सेला।

हम प्रशंसा करेंगे. तो, भगवान मुक्ति लाते हैं। वह मुक्ति लाता है और मुक्ति के परिणामस्वरूप, हम सदैव स्तुति करेंगे, सेला।

तो, यह राजा अपने उद्धार के कार्यों को करके लोगों को प्रशंसा का आधार प्रदान करता है। और इसलिए, राजा के बारे में यह धारणा है, राजा वह है जिसे अपने उद्धार और भजनहार या याचक

को बचाने के लिए प्रशंसा प्राप्त करनी चाहिए। फिर नीचे अध्याय 47 श्लोक दो से तीन में, हमें ये श्लोक मिलते हैं।

परमप्रधान यहोवा कितना अद्भुत है, वह सारी पृथ्वी का महान राजा है। उसने राष्ट्रों को हमारे अधीन कर दिया, और लोगों को हमारे पैरों के नीचे कर दिया। तो वहाँ फिर से, आप महान राजा को इन लोगों के पक्ष में देखते हैं और वे दुश्मनों को हरा रहे हैं।

अध्याय 47 में, उससे थोड़ा नीचे, हमें 47:6 से 8 तक यह अंश मिलता है, भगवान की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ, हमारे भगवान की स्तुति गाओ, हमारे राजा की स्तुति गाओ। राजा कौन है? भगवान राजा है। परमेश्वर की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ, हमारे राजा की स्तुति गाओ, परमेश्वर सारी पृथ्वी का राजा है उसके लिए स्तुति गाओ।

उसके लिये स्तुति का एक भजन गाओ। तो, यह भजन 47.6 से 8 तक है। यहां एक प्रमुख विषय जहां भगवान की पूरी पृथ्वी के राजा के रूप में प्रशंसा की जाती है और इसलिए प्रतिक्रिया यह है कि वह राजा है इसलिए उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए, उसकी प्रशंसा इसलिए की जानी चाहिए क्योंकि वह राजा है। अब यह होने जा रहा है, मैं दूसरी किताब से बाहर हो चुका हूं, लेकिन हर कोई इस भजन को जानता है।

तो, मैं सिर्फ भजन 23 पर एक टिप्पणी करना चाहता हूँ। भजन 23 में एक समस्या है। भजन 23 में एक अंतर्निहित वियोग है।

स्तोत्र 23, संभवतया स्तोत्र के प्रारंभ में सबसे प्रसिद्ध स्तोत्र, प्रभु मेरा चरवाहा है। मुझे यह अच्छा नहीं लगेगा। वह मुझे हरी चराइयों में लिटाता है।

वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है। आप उस स्तोत्र के अंत में ध्यान देंगे कि अचानक यह कल्पना आती है कि प्रभु मेरा चरवाहा है, जो मुझे शांत पानी के पास हरे चरागाहों में लेटी हुई भेड़ की तरह बनाता है। भजन के अंत में, रूपक में शाही यजमान के रूपक में बदलाव आया है।

और इस प्रकार, वह मेरे शत्रुओं की उपस्थिति में मेरे सामने जेवनार तैयार करता है। ठीक है। आप शत्रुओं को देखते हैं।

वह मेरे सामने भोज तैयार करता है। वह मेरे सिर पर तेल लगाता है। और इसलिए यहां आपके पास शाही मेज़बान का भोज है और आपके पास यह चरवाहे और भेड़ की छवि है।

और इसलिए, भजन 23 में कल्पना के बीच एक विसंगति है। एक व्यक्ति है जो मेरे डॉक्टर के लिए मेरा गुरु था जिसका नाम डॉ. डॉन फाउलर है। और डॉ. डॉन फाउलर ने चरवाहा रूपक का अध्ययन किया।

और प्राचीन निकट पूर्व में उन्होंने जो पाया वह यह है कि चरवाहा, जब वह चरवाहों का उल्लेख करता है, तो कई बार जब वह चरवाहा कहता है, तो इसका वास्तव में मतलब राजा होता है।

क्योंकि राजा स्वयं को प्रजा का चरवाहा समझते थे, और प्रजा भेड़ थी। अब, यदि आप भजन 23 को देखते हैं, तो आप इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, प्रभु मेरा चरवाहा है, अर्थात् राजा।

वह मुझे शान्त जल और हरी चराइयों के पास लिटाता है। और तब शाही मेज़बान मेरे सामने एक भोज तैयार करता है। यह एक राजा की भूमिका है।

इसलिए, यदि आप यह मानते हैं कि प्रभु मेरा चरवाहा है, यह देखते हुए कि चरवाहे के रूपक के माध्यम से राजा को वापस लाने के लिए, तो भजन एकजुट हो जाता है और दोनों छवियों के बीच कोई अलगाव नहीं है। भजन 23 में राजा प्रमुख है। यहोवा मेरा चरवाहा, मेरा राजा है, और वह मुझे शांत जल के पास हरी चराइयों में बैठाता है।

और किसी भी तरह, मृत्यु की छाया की घाटी से होकर चलें। भेड़ की तरह, वह राजा है जो अपने लोगों का मार्गदर्शन करता है, लेकिन फिर वह शाही मेज़बान भी है। तो, फिर राजत्व रूपक भजन 23 को एकजुट करता है।

यह भजन की कल्पना, भजन 23 के पहले भाग और दूसरे भाग के बीच के इस अलगाव को हल करता है। मुझे लगता है कि डॉ. फाउलर ने उस स्तोत्र को अधिक अर्थपूर्ण बनाने और उस स्तोत्र में एकता, सामंजस्य, साहित्यिक सामंजस्य को देखने में जो किया है वह शानदार है। तो यह कुछ प्रमुख रूपक है जिसके बारे में हमने राजा के संदर्भ में बात की।

अब मैं जो करना चाहता हूँ वह राजा की इस बात को विकसित करना है जो दुश्मन की रक्षा करता है और उसे हराता है। राजा किसकी रक्षा करता है? राजा निर्बलों की रक्षा करता है। और इसलिए, उन्हें रक्षक के रूप में जाना जाता है।

यह राजा के कार्यों में से एक है। और इसलिए यहां हमें भजन 68 श्लोक चार और पांच में मिलता है, यह कहता है, भगवान के लिए गाओ, उसके नाम की स्तुति गाओ, उसकी स्तुति करो जो बादलों पर सवार है। उसका नाम प्रभु है।

उसके सामने आनन्द मनाओ। और फिर ध्यान दें कि यह क्या कहता है। भगवान क्या है? पिताहीन को पिता।

पितृहीन कौन है? जो अनाथ है, वह अनाथ है। वह अनार्थों का पिता, और विधवाओं का रक्षक है। भगवान अपने पवित्र निवास में है।

और इसलिए आप इस तरह की चीज़ देखते हैं जहां भगवान सिंहासन पर हैं। वह किसकी मदद करता है? वह अनार्थों की सहायता करता है। वह विधवा, अनाथ, ऐसे लोगों की मदद करता है जो समाज से बाहर हैं।

इसलिए, वह कमज़ोर लोगों की रक्षा करता है। अध्याय 72, श्लोक चार. अब यह दिलचस्प है क्योंकि यह भगवान के बारे में बात नहीं कर रहा है।

यह भजन 72 में है; यह सुलैमान के बारे में बात हो रही है। राजा के रूप में सुलैमान राजसत्ता संभाल रहा है। भजन 71 में डेविड कमज़ोर है।

भजन 72, सुलैमान ने सत्ता संभाली और श्लोमो या सुलैमान ने यह कहा, वह पीड़ितों की रक्षा करेगा। यह एक राजा, एक सामान्य राजा, एक मानवीय राजा की भूमिका है। लेकिन देखिए कि दैवीय राजत्व मानव राजा के रूपक से निर्मित होता है।

तो, मानव राजा क्या करता है, मानव राजा को क्या करना है? वह लोगों के बीच में पीड़ितों की रक्षा करेगा और जरूरतमंदों के बच्चों को बचाएगा। वह अत्याचारी को कुचल डालेगा। और तब राजा की भूमिका जरूरतमंदों के बच्चों की रक्षा करना थी।

भजन 72 छंद 12 से 14, फिर से, सुलैमान या श्लोमो भजन 72 में लिखते हैं, क्योंकि वह उन जरूरतमंदों को बचाएगा जो चिल्लाते हैं, उन पीड़ितों को जिनका कोई मदद करने वाला नहीं है। वह कमज़ोरों और जरूरतमंदों पर दया करेगा और जरूरतमंदों को मौत से बचाएगा। वह उन्हें उत्पीड़न और हिंसा से बचाएगा क्योंकि उनकी दृष्टि में उनका खून अनमोल है।

तो यहां आपके पास मानव राजा है जो मूल रूप से जरूरतमंदों की तलाश कर रहा है और उनका वकील बन रहा है, उन्हें बचा रहा है, उन्हें बचा रहा है, उनकी रक्षा कर रहा है, उन्हें उन लोगों के हाथों से बचा रहा है जो उन पर अत्याचार करेंगे और उन पर हिंसा पैदा करेंगे क्योंकि वे अपनी स्थिति में असहाय हैं अपना बचाव करना। अब, इसका एक हिस्सा दुश्मन को हराना है। और इसलिए, भजन 70 में, ऐसा नहीं है कि वह कमज़ोर लोगों की रक्षा करता है, बल्कि वह दुश्मन को भी हराता है।

और इसलिए यह राजा की भूमिका है। भजन 70 श्लोक एक और दो, जो मेरे प्राण के खोजी हैं वे लज्जित और भ्रमित हों। जो मेरे विनाश की इच्छा रखते हैं वे सब अपमानित होकर लौटें।

जो मुझ से आहा, आहा कहते हैं, वे लज्जा के मारे फिरे। तो भूमिकाओं में से एक दुश्मन को हराना है। भजन 60 श्लोक 12 में भी आपका इसी प्रकार का विचार है।

ईश्वर के साथ हम विजय प्राप्त करेंगे, शत्रु पर विजय, शत्रु पर, हम शत्रु को परास्त करेंगे और वह हमारे शत्रुओं को रौंद डालेगा। वह हमारे शत्रुओं को रौंद डालेगा। तो, जीत हुई है।

इन गरीब, असहाय लोगों को देखते हुए, भगवान उन दुश्मनों को हराकर उनके लिए जीत हासिल करते हैं जिन्होंने उनका विरोध किया था और उन पर अत्याचार किया था और उन पर हिंसा या हमास किया था। अतः राजा रक्षा भी करता है और पराजित भी करता है। अब मैं मुक्ति, न्याय, बचाव और मोक्ष की इस धारणा को और विकसित करना चाहता हूं।

और फिर बचाव के लिए यह आह्वान प्रशंसा में परिणत होता है। ताकि गरीबों और जरूरतमंदों को राहत मिले, लेकिन फिर इस आंदोलन की प्रशंसा की जानी चाहिए। और इसलिए, हम बस कुछ छंदों को देखेंगे।

स्तोत्र 69 श्लोक 14 और श्लोक 18 भी कहता है, मुझे कीचड़ से छुड़ा। मुझे डूबने मत दो। मुझे गहरे जल से उन लोगों से बचा जो मुझ से बैर रखते हैं।

और इसलिए, आप अराजकता के पानी को उसके विरुद्ध आते हुए देखते हैं। वह कह रहा है, हे भगवान, मुझे इस गहरे पानी से बाहर निकालो। मुझे सौंप दो।

मुझे कीचड़ में मत डूबने दो। क्या किसी को यिर्मयाह याद है? यहाँ भजन 69 और यिर्मयाह के बीच बहुत दिलचस्प संबंध है। यिर्मयाह को कई दिनों तक उस सेप्टिक टैंक या टंकी में रखा जाता है क्योंकि वह कीचड़ में डूब जाता है और भगवान से उसे बचाने की गुहार लगाता है।

और इसलिए, यहां यिर्मयाह की पुस्तक के साथ दिलचस्प संबंध हैं। और मुझे कभी-कभी बाद के संपादकों में से एक के रूप में भजन की पुस्तक में यिर्मयाह के हाथ के बारे में आश्चर्य होता है। लेकिन फिर भी, यदि आप भजन 68 पर जाएं, फिर भजन 69 पर जाएं, एक पर 68 और 68:16 पर जाएं और फिर 19 से 20 पर जाएं, तो यह यही कहता है, हे ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों, उस पहाड़ को ईर्ष्या से क्यों देखो, जहां ईश्वर चुनता है शासन करने के लिए।

तो, भगवान को राजा के रूप में चित्रित किया गया है, एक पहाड़ पर शासन करते हुए जहां भगवान स्वयं हमेशा के लिए निवास करेंगे। तो, भगवान इस पर्वत पर एक राजा के रूप में निवास करते हैं। प्रभु की स्तुति करो, परमेश्वर की, हमारे उद्धारकर्ता की, जो प्रतिदिन हमारा बोझ उठाता है।

हमारा परमेश्वर उद्धार करनेवाला परमेश्वर है। तो, उनके प्रमुख कार्यों में से एक यह है कि भगवान वह है जो बचाता है। संप्रभु प्रभु की ओर से मृत्यु से मुक्ति मिलती है।

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर लोगों को मृत्यु से बचाता है। और इसलिए, यह भजन 68 है। यदि आप भजन 68, भजन 68 24 से 26 में कुछ और छंद नीचे जाते हैं, तो आप अपना जुलूस देखते हैं।

ठीक है। तो, भजन 68, भगवान उन्हें बचाता है। और अब भजन 68 में, बस कुछ छंदों के बाद, जैसे पांच छंदों के बाद, यह कहता है, आपका जुलूस सामने आ गया है।

तो, लोग एक जुलूस निकाल रहे हैं जहां समुदाय एक साथ इकट्ठा होकर चल रहा है। तेरी बारात सामने आ गई है, हे भगवान, मेरे भगवान और राजा की बारात। वहाँ के समूह, मेरे भगवान और राजा के पवित्रस्थान में जुलूस पर ध्यान दें।

तो, यह बाद में आरोहण के भजनों की तरह है कि पहाड़ी से पवित्र स्थान तक एक जुलूस होता है जहां भगवान, मेरे राजा, यहां मेरे पुजारी नहीं, पुजारी भगवान, वहां भगवान का पुजारी भी है। मेरा इरादा इसे कमतर या कुछ भी कहने का नहीं है, लेकिन यहां ध्यान इस बात पर है कि वे उस अभयारण्य तक आ रहे हैं जहां भगवान, उनके राजा रहते हैं। सबसे आगे गायक और उनके पीछे संगीतकार।

उनके साथ दासियाँ डफ बजा रही हैं। और इसलिए, आपको वास्तव में एक जुलूस मिलता है और इसमें गायकों से संगीतकारों से लेकर तंबूरा बजाने वाली युवतियों तक जाने का वर्णन होता है। बड़ी सभा में परमेश्वर की स्तुति करो।

इस्राएल की सभा में यहोवा की स्तुति करो। और इसलिए, यह इज़राइल को एक साथ इकट्ठा होने का चित्रण करता है। और फिर एक समूह के रूप में भगवान के अभयारण्य तक एक जुलूस निकलता है जिसे उनका राजा माना जाता है।

और वे संगीत गाते हैं और गायक वहां हैं और संगीतकार वहां हैं और डफ बजाने वाले वहां हैं। तो, एक जुलूस है। फिर नीचे भजन 54 छंद छह और सात में, हमारे पास वह चीज़ है जहाँ आपने मुझे मेरी सभी परेशानियों से बचाया है।

और फिर यह उन्हें इस ओर ले जाता है, क्योंकि आपने मुझे मेरी परेशानियों से बचाया है, मैं एक तरह से आपकी प्रशंसा करूंगा। और इसलिए, राजा के रूप में भगवान के उद्धार के बीच यह संबंध, राजा उन्हें बचाता है और फिर राजा की प्रशंसा करता है। और इसलिए, भजन 54 श्लोक छह और सात में, यह कहता है, मैं तुम्हें स्वेच्छाबलि चढ़ाऊंगा।

हे यहोवा, मैं तेरे नाम की स्तुति करूंगा, क्योंकि यह अच्छा है। क्योंकि उस ने मुझे मेरी सब विपत्तियों से छुड़ाया है। तुम उसकी स्तुति क्यों करते हो? उसने मुझे मेरी सभी परेशानियों से छुटकारा दिलाया है और मेरी आँखों से मेरे शत्रुओं पर विजय की दृष्टि बनी हुई है।

और आपके पास शत्रुओं को प्रशंसा की धारणा की पृष्ठभूमि के हिस्से के रूप में चित्रित किया गया है। अब राजा उद्धार करता है, बचाता है, और बचाता है। और उस से, भजनकार जिसे बचाया गया है, प्रशंसा में उत्तर देता है।

और हमारा अगला प्रश्न है, सिथ्योन के राजा और ईश्वर के सार्वभौमिक शासन के बारे में क्या? और इसलिए आपके पास यहां यह है कि राजा सिथ्योन से है। यह सार्वभौमिक नियम है। यह सिथ्योन से एक सार्वभौमिक नियम की ओर जाता है।

और यह एक तरह से यीशु का अग्रदूत है। क्या आपको कुएं पर महिला से यीशु की टिप्पणी याद है, तुम लोग कहते हो कि तुम गेरिज़िम पर्वत पर पूजा करते हो। हम यरूशलेम में पूजा करते हैं।

और यीशु कहते हैं, भविष्य में जो लोग उसकी आराधना करेंगे वे आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करेंगे। दूसरे शब्दों में, यह यह पर्वत या वह पर्वत नहीं होगा, पूरी पृथ्वी पर ईश्वर का सार्वभौमिक शासन होगा। और इसलिए, भजन संहिता सिथ्योन को नीचा नहीं दिखाती है।

सिथ्योन परमेश्वर का निवास स्थान, परमेश्वर का नगर है। तो, यह बिल्कुल भी अपमानजनक नहीं है। लेकिन भजनहार, जैसा कि यीशु ने किया था, इस विस्तार को सिथ्योन से पूरी दुनिया तक दिखाता है।

और इस प्रकार, राजा का स्थान उसके पवित्र पर्वत, सिथ्योन पर विराजमान हो गया। मैं पहले इसके साथ काम करना चाहता हूँ, इसे साबित करना चाहता हूँ, और फिर हम इस सार्वभौमिक नियम की ओर बढ़ेंगे। तो फिर परमेश्वर को सिथ्योन से शासन करते हुए कैसे चित्रित किया गया है? उसकी राजधानी, उसका राजा, उसका शहर।

तब शहर प्रमुख फोकस थे। वह भजन अध्याय 43, श्लोक तीन में कहता है, वह यह कहता है, अपना प्रकाश और अपना सत्य भेजो। उन्हें मेरा मार्गदर्शन करने दीजिये।

वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर ले चलें। तो, भगवान के पास यह विशेष पर्वत है, यह पवित्र पर्वत उस स्थान के लिए है जहाँ आप रहते हैं। तो भगवान का चित्रण किया गया है।

हाँ, भगवान हर जगह है। ईश्वर वर्तमान में है। वह हर जगह है और उस तरह की चीज़ है।

लेकिन यरूशलेम में, सिथ्योन में एक विशिष्टता है। और वह कहता है, मुझे अपने विशेष स्थान अर्थात् अपने पवित्र पर्वत पर ले आ। भजन 43, श्लोक तीन, 46 श्लोक चार और पाँच तक, और फिर श्लोक 11 तक।

तो, यह भजन 46, पाँच, चार और पाँच है। यह कहता है, कि एक ऐसी नदी है जिसकी धाराएं परमेश्वर के नगर को आनन्दित करती हैं। ध्यान दें कि शहर को क्या कहा जाता है।

शहर को अक्सर इस तरह नामित नहीं किया जाता है, लेकिन इसे भगवान का शहर कहा जाता है। यह भगवान का शहर है। वह पवित्र स्थान जहाँ परमप्रधान निवास करता है।

वह यरूशलेम, सिथ्योन है। भगवान उसके भीतर है। वह असफल नहीं होगी।

दिन निकलते ही भगवान उसकी सहायता करेंगे। और फिर श्लोक 11, अध्याय 46 तक। यह कहता है कि सर्वशक्तिमान प्रभु हमारे साथ हैं।

याकूब का परमेश्वर हमारा गढ़ है। दिलचस्प। और फिर सेला, इस तरह का ध्यानपूर्ण विराम।

भजन 48, आप यहां भजन 48 पर जाएं। सिथ्योन फिर, भजन 48। यदि आप कभी यरूशलेम जाते हैं, तो भजन 48 वह है जिसे आपको यरूशलेम की दीवारों पर पढ़ते समय पढ़ना चाहिए।

अब मुझे एहसास हुआ कि वे दीवारें सुलेमान और अन्य लोगों द्वारा बहुत बाद में बनाई गई थीं। लेकिन फिर भी, सिथ्योन, परमेश्वर का शहर, भजन 48। और मुझे इसमें से कुछ छंद पढ़ने दीजिए जहां भजन 48 में सिथ्योन और महान राजा के शहर का उल्लेख किया गया है।

प्रभु महान है और हमारे परमेश्वर के नगर में सबसे अधिक स्तुति के योग्य है। वह कहां है? वह सिथ्योन है। हमारे परमेश्वर के नगर में, उसके पवित्र पर्वत पर।

यह अपनी उदात्तता में सुंदर है, संपूर्ण पृथ्वी का आनंद है। माउंट ज़ाफोन की चरम ऊंचाई की तरह माउंट सियोन, महान राजा का शहर, महान राजा का शहर, भगवान का शहर है। क्या आप देखते हैं कि वे चीज़ें यहाँ कैसे समान हैं? बहुत ही रोचक।

राजा के फिर से आने का रूपक, हमारे भगवान का शहर, महान राजा का शहर। भगवान उसके गढ़ों में है। उसने खुद को उसका गढ़ दिखाया है।

इसके अगले वाले के बारे में क्या दिलचस्प है, और इसने मुझे वास्तव में थोड़ा अचंभित कर दिया। जब मैं भजन 51 कहता हूँ, तो लगभग हर कोई जो वास्तव में भजन से परिचित है, वे कहेंगे कि भजन 51 बथशेबा द्वारा अपने पापों को स्वीकार करने के बाद पाप करने वाला डेविड है। यह एक प्रायश्चित्त स्तोत्र है जहाँ दाऊद अपना पाप स्वीकार करता है।

तुम्हें पता है, मेरे अंदर एक शुद्ध हृदय पैदा करो। हे भगवान, अपनी पवित्र आत्मा को मुझसे मत छीनो। और वह प्रार्थना करता है, मेरे अपराधों, मेरे पापों के लिए मुझे क्षमा कर दो और यह पश्चाताप भजन है जहाँ डेविड बथशेबा के साथ अपने पाप पर पश्चाताप करता है।

और इसलिए, इसे प्रायश्चित्त स्तोत्र के रूप में लिया जाता है। हालाँकि, जिस बात में मेरी दिलचस्पी थी वह यह थी कि भजन 51 में, आप देखते हैं कि यह भजन 48 के ठीक बाद है। तो, ये सभी जुड़े हुए हैं।

भजन 51 के अंत में, डेविड उस प्रायश्चितात्मक भूमिका से बाहर निकल जाता है। वह जो कहता है वह सचमुच दिलचस्प है। भजन 51, पद 18 कहता है, अपनी प्रसन्नता से सियोन को समृद्ध बना।

दाऊद और उसके पाप को याद करो, लोगों के खिलाफ जनगणना, और ऐसी चीज़ें, बथशेबा। वह कहता है, सियोन को समृद्ध बनाता है। यरूशलेम की दीवारों का निर्माण करो।

वहाँ थोड़ा-थोड़ा नहेमायाह जैसा लगता है। यरूशलेम की दीवारों का निर्माण करो। एक राजा यही करता है।

वह दीवारें वैसे ही बनाता है जैसे हिजकिय्याह ने यरूशलेम में चौड़ी दीवार बनाई थी। तो, आपने यरूशलेम की दीवारों का निर्माण कर लिया है। यह प्रायश्चित्त स्तोत्र में है।

भजन 51 इसी प्रकार समाप्त होता है। परमेश्वर मूल रूप से सियोन को समृद्ध बनाता है, और यरूशलेम की दीवारों का निर्माण करता है। फिर, यरूशलेम, परमेश्वर, हमारे राजा पर ध्यान परमेश्वर के शहर, सियोन शहर में है।

जब आप भजन 53.6 तक जाते हैं, तो आपको एक समान बात मिलती है। यह कहता है, हे, कि इस्राएल का उद्धार सियोन से निकलेगा। सियोन, वह स्थान जहाँ परमेश्वर निवास करता है। जब परमेश्वर अपने लोगों का भाग्य लौटा दे, तो याकूब आनन्दित हो, और इस्राएल आनन्दित हो।

अब मैं शिफ्ट होना चाहता हूँ. हमने मूल रूप से दिखाया है कि भजन 48, भजन 51, मैं भजन 50 कर सकता था।

हम भजन 46 और 47 कर सकते थे और अपने परमेश्वर के शहर, सिय्योन, उसके पवित्र पर्वत, जहां उसका अभयारण्य रहता है, जहां लोग ऊपर जाते हैं, पर यह ध्यान केंद्रित कर सकते थे। जुलूस पवित्र स्थान तक जाते हैं जहाँ भगवान हैं। अब मैं जो करना चाहता हूँ वह कहना है, एक मिनट रुकें, लेकिन ऐसा नहीं है, यह एक अर्थ में विशिष्ट है, लेकिन दूसरे अर्थ में, यह सिय्योन से है।

परन्तु परमेश्वर का सार्वभौमिक शासन सारी पृथ्वी पर चलता है। यही आप यीशु के साथ देखते हैं, मुझे लगता है कि बाद में यह कहने पर, ठीक है, यरूशलेम, हाँ, लेकिन यरूशलेम से परे, यह पूरी दुनिया पर है। और इसलिए, भजन 57 श्लोक पांच और श्लोक 11, और यह मेट हॉफलैंड के एक सुंदर गीत में किया गया है।

यदि आप कभी भी गेट लॉस्ट इन जेरूसलम नामक कार्यक्रम में शामिल होते हैं, जहां आप वास्तव में जेरूसलम के माध्यम से चल सकते हैं और आप जैतून पर्वत के शीर्ष पर जा सकते हैं, यदि आप वहां पहुंचते हैं और यह अंदर है बर्फ, गाना बजाने के लिए बटन दबाएं और मेट हॉफलैंड इस सुंदर भजन को गाएंगे जो इस प्रकार है, भजन 57 छंद पांच और 11। यह एक खंडन है। भजन में यह दो बार कहा गया है।

यह एक परहेज है. यह इसे श्लोक पाँच में कहता है और फिर छह श्लोक बाद में, यह इसे फिर से कहता है। यह कहता है, हे परमेश्वर, तू स्वर्ग से भी ऊंचे हो।

तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर फैले। तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर, परमेश्वर का सार्वभौम शासन और महिमा व्याप्त हो। और फिर श्लोक 11 में, यह कहा गया है, हे भगवान, स्वर्ग से भी ऊंचे हो जाओ।

तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर फैले। फिर से उसी तरह का विचार दोहराते हुए. यदि आप भजन 72 पर जाएं, तो हमें उसी प्रकार की चीज़ मिलती है।

और यह दिलचस्प है क्योंकि भजन 72, पुस्तक दो के अंत में है। तो, यह पुस्तक दो, अध्याय 72, सुलैमान, अंतिम, डेविड की प्रार्थनाओं को यहीं समाप्त कर दिया गया है। और यहीं पर दूसरी किताब खत्म होने वाली है और तीसरी किताब 73 से शुरू होने वाली है।

यह कहता है, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो, जो अकेला ही अद्भुत काम करता है। उसके महिमामय नाम की सदा स्तुति होती रहे। सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए।

सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए। तथास्तु। और आमीन.

और जब आपको वह दोहरा आमीन मिल जाता है, क्योंकि आप लोग पहले सत्र में जा चुके हैं, तो आपको एहसास होता है कि दोहरा आमीन आपको बताता है, वाह, यह किताब का अंत है। इस

प्रकार पुस्तक की दूसरी पुस्तक उसके महिमामय नाम की सदैव स्तुति के साथ समाप्त होती है। सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए।

तथास्तु। और आमीन. और आमीन.

तो यह बहुत अच्छी बात है. परमेश्वर का शासन सियोन में शुरू हुआ और पूरी पृथ्वी पर चला गया, राजा का सार्वभौमिक शासन। अब राजा के कुछ गुण क्या हैं? और हम बस इनके माध्यम से आगे बढ़ेंगे क्योंकि हम राजा को नीचे गिरा रहे हैं।

राजा में व्यक्तिगत रूप से किस प्रकार के गुण होते हैं? और एक भजनहार किस प्रकार की चीज़ों के लिए परमेश्वर की स्तुति करता है? और इसलिए, भजन 48 में, हमें भजन 48 से शुरुआत करनी चाहिए, 48 छंद नौ और 10। हम देखते हैं, और मैं हिब्रू शब्द डालने जा रहा हूँ, लेकिन अंग्रेजी शब्द भी उतने ही अच्छे हैं। तो, यह 48, नौ, और 10 में यह कहता है, यह कहता है, आपके मंदिर के भीतर, हे भगवान, हम आपके अटूट प्रेम पर ध्यान करते हैं।

हेस्ड शब्द ही आपका अमोघ प्रेम है। यह शब्द नेल्सन ग्लक के संपूर्ण अध्ययन के लायक है और कई अन्य लोगों ने इस शब्द हेस्ड, अमोघ प्रेम पर लिखा है। कभी-कभी मैंने इसे ज़िद्दी प्यार कहा है, ऐसा प्यार जो साथ नहीं छोड़ता।

अन्य लोग इसे संविदात्मक प्रेम कहते हैं कि वे एक वाचा बनाते हैं और ईश्वर अपने वचन को अपने प्रेम, अपने अटल प्रेम के हिस्से के रूप में रखता है। और पहले मुझे इसे खत्म करने दीजिए। यह कहता है कि हम आपके हेस्ड पर, आपके अमोघ प्रेम पर ध्यान करते हैं।

हे परमेश्वर, तेरे नाम के समान तेरी स्तुति पृथ्वी की छोर तक पहुंचती है। तुम्हारा दाहिना हाथ ज़ेडेक से भरा हुआ है। ज़ेडेक धार्मिकता है।

तेरा दाहिना हाथ धर्म से भरा हुआ है। और इसलिए, धार्मिकता एक न्यायाधीश के रूप में ईश्वर की भूमिका है जो लोगों का न्याय सही ढंग से और निष्पक्षता से करता है। आपको डीओजे द्वारा इन सभी पेचीदा कामों को करने के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

धार्मिकता और न्याय की जीत होती है. और इसलिए, परमेश्वर धार्मिकता का परमेश्वर है। वह धार्मिकता और अटल प्रेम से शासन करता है।

वह राजा है, उसकी भूमिका। स्वर्ग में, भजन संहिता 50 श्लोक छह में, यह कहा गया है, स्वर्ग परमेश्वर के ज़ेडेक, उसकी धार्मिकता की घोषणा करता है। स्वर्ग उसकी धार्मिकता का प्रचार करता है क्योंकि परमेश्वर स्वयं न्यायाधीश है।

अब इससे पहले कि आप कहें, ठीक है, न्यायाधीश राजा नहीं है, आपने इन रूपकों को मिला दिया है। और हाँ, सचमुच। लेकिन राजा, सुलैमान की भूमिकाओं में से एक क्या थी? जब 1 राजा 3 में सुलैमान ने सत्ता संभाली, तो सुलैमान ने कहा, हे भगवान, मैं सिर्फ एक युवा गुंडा बच्चा हूँ।

मैं नहीं जानता कि अपने लोगों पर निर्णय, निष्पक्ष निर्णय लेकर इन लोगों पर कैसे शासन किया जाए। तो मूल रूप से, सुलैमान कहता है, हे परमेश्वर, मुझे समझने वाला हृदय दे, मुझे सुनने वाला हृदय दे ताकि मैं इन लोगों का निष्पक्षता से न्याय कर सकूँ। और वैसे, यह बहुत दिलचस्प है कि 1 किंग्स के अध्याय तीन में, सुलैमान लोगों का न्याय करने के लिए एक समझदार दिल की मांग करता है।

और वह सबसे पहला काम क्या करता है? जबकि सैमुअल सहित अन्य सभी राजा, सबसे पहले जो काम करते हैं वह है बाहर जाकर सैन्य जीत हासिल करना। सुलैमान के लिए, कोई सैन्य विजय नहीं है। सुलैमान के लिए, यह न्याय की जीत है जहां ये दो महिलाएं आती हैं।

एक महिला अपने बच्चे पर लुढ़क गई और उसे मार डाला। अब वे इस बात पर झगड़ रहे हैं कि यह किस बच्चे को मिलेगा। सुलैमान कहता है, मुझे एक तलवार दो।

मैं बच्चे को दो टुकड़ों में काट दूँगा। तब सुलैमान कहता है, तब माता अवश्य कहती है, दूसरी स्त्री को बच्चा पैदा करने दो। तब सुलैमान यह पता लगाता है कि माँ किसको अपना न्याय और अपना मिशपत दिखा रही है।

तो, राजा की भूमिका का एक हिस्सा सर्वोच्च न्यायालय की तरह होना था, एक न्यायाधीश, एक निष्पक्ष न्यायाधीश, एक ऐसा न्यायाधीश जो धार्मिकता के साथ न्याय करता था। तो वह भूमिका राजा के लिए उपयुक्त है। और फिर 72.1 और 2 में मिशपत के बारे में बोलते हुए, यह कहता है, राजा को अपने न्याय से संपन्न करो, मिशपत, हे भगवान, शाही पुत्र को अपनी धार्मिकता से संपन्न करो, अपने ज़ेडेक।

और इसलिए, आपको ज़ेडेक, धार्मिकता और मिशपत, न्याय मिला है। और वह प्रार्थना करता है, और वह तेरी प्रजा का न्याय धर्म से, और तेरे दीन लोगों का न्याय धर्म से करेगा। दूसरे शब्दों में, इज़राइल में, धन और न्याय का आपस में कोई संबंध नहीं था।

दीन, दीन, और सताए हुए लोग जब राजा के पास आते थे, तब उनको न्याय मिलता था, क्योंकि राजा को धर्म से न्याय करना होता था। उसे न्याय के साथ न्याय करना था। और फिर यहाँ एक आखिरी, भजन 57 श्लोक तीन इस तरह से बात करता है।

यह कहता है, वह स्वर्ग से भेजता है, वह मुझे बचाता है उन लोगों को डांटता है जो गर्मजोशी से मेरा पीछा करते हैं, सेला, दुश्मन। भगवान उसे क्या भेजता है? उसका प्यार और वफादारी। उसका प्रेम फिर से हेस्ड शब्द है, उसका अटल प्रेम, उसका जिद्दी प्रेम, उसका प्रेम जो कभी नहीं छूटेगा, उसका अनुबंधित प्रेम।

वह अपना प्यार और अपनी वफादारी भेजता है, ईमेट, हेसेड वे एमेट. और ये दो खूबसूरत शब्द हैं. एमेट का अनुवाद सत्य है।

तो, उसका प्यार और सच्चाई. क्या किसी को याद है कि नए नियम में यीशु कहते हैं कि वह अनुग्रह और सत्य, अनुग्रह और सत्य के साथ आते हैं। और इसलिए यह, जॉन में, इस हेसेड वे का एक संदर्भ हो सकता है एमेट .

डॉ. हंट, जो जॉन की पुस्तक में एक जादूगर और प्रतिभाशाली है, हेसेड और एमेट के बीच संबंध बनाता है , जो पुराने नियम में मजबूत है। खैर, यह यहीं मजबूत है। हमने अभी वहां से यह श्लोक पढ़ा है कि हेसेद और एमेट यीशु द्वारा जॉन 1 में अनुग्रह और सत्य कहे जाने से जुड़े हैं।

अब आपके पास जो हो रहा है वह यह है कि आपके पास यह राजा रूपक है और राजा रूपक यह है कि ईश्वर संप्रभु है। वह राजा है. वह धर्म से न्याय करता है।

वह अपने लोगों की रक्षा करता है। वह उन्हें बचाता है। वह उनका उद्धार करता है।

वह अपनी धार्मिकता, अपने न्याय, अपने हेसड प्रेम, अपनी सच्चाई के लिए जाना जाता है। लेकिन अब आपके पास कई बार रूपक होते हैं, इस तरह के बड़े रूपक होते हैं, आपके पास स्पिनऑफ़ रूपक होते हैं। और इसलिए क्या होता है कि आपके पास अन्य रूपकों का एक संपूर्ण संयोजन या संबंध होता है जो इस राजत्व रूपक से निकलते हैं और इसके साथ आते हैं।

इसलिए, मैं आगे उस पर गौर करना चाहता हूं जिसे मैंने इस राजत्व रूपक नेटवर्क कहा है। यह नेटवर्क हमें राजा रूपक के लिए एक प्रकार का संदर्भ प्रदान करेगा और यह अन्य रूपकों में कैसे घूमता है और कैसे उत्पन्न होता है, मुझे कैसे कहना चाहिए, आपके पास बड़ा रूपक है और यह इन अन्य रूपकों को जन्म देता है जो भगवान का संदर्भ देते हैं। तो, भगवान एक के रूप में, और फिर हम भजन 62 श्लोक दो और फिर छह और सात को देखते हैं।

वह कहता है, केवल वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है। तो भगवान को चट्टान कहा जाता है। वह मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है।

चट्टान शरण और सुरक्षा का स्थान है। एक ऐसी जगह जहां आप चट्टान के पीछे छिप सकते हैं। अतः वह मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है।

क्या आपको पीछे से मूसा का गीत याद है, मुझे लगता है कि यह व्यवस्थाविवरण 32 है जिसमें मूसा ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है, ईश्वर एक चट्टान है। और इसलिए यहां आप इसे भजनों के संदर्भ में देखते हैं। वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है।

वह मेरा गढ़ है. मैं कभी नहीं डिगूंगा. वह भजन 62 श्लोक दो से छः और सात तक है।

वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है। वह मेरा गढ़ है. मैं कभी नहीं डिगूंगा.

यह एक परहेज है. उन्होंने इसे श्लोक दो में कहा, यह श्लोक छह तक वही बात कहता है। मेरा उद्धार और मेरा सम्मान ईश्वर पर निर्भर है।

वह मेरी शक्तिशाली चट्टान, मेरा शरणस्थान है। वह मेरी शक्तिशाली चट्टान है, मेरा आश्रय है, एक ऐसा स्थान है जहाँ मैं चट्टान में सहायता पा सकता हूँ। यह आपको हेरोदेस के मसादा के बारे में सोचने पर मजबूर कर देता है जहाँ वह खोजने के लिए मसादा की चट्टान पर गया था, ताकि कोई उस पर हमला न कर सके।

अब पद्य में नीचे, तो चट्टान भगवान के लिए एक रूपक है। यहाँ एक और है। इस ईश्वर को चट्टान कहा जाता है और मुझे लगता है कि यह राजत्व रूपक, सुरक्षा और सामान की धारणा को जन्म देता है।

मजबूत मीनार भजन संहिता 61 श्लोक तीन कहता है कि तू मेरा शरणस्थान है, अर्थात् शत्रु के विरुद्ध दृढ़ मीनार है। तो यहां आपको दुश्मन मिलता है और फिर मजबूत टॉवर एक ऐसी जगह है जहां आप दुश्मन या दुश्मन के हमलों से सुरक्षा के लिए दौड़ सकते हैं। यह भजन 61 श्लोक तीन कहता है।

और फिर ठीक बाद में भजन 71 श्लोक एक में शरण की धारणा के बारे में कहा गया है, हे प्रभु, मैं ने तेरी शरण ली है। मुझे कभी लज्जित न होना पड़े। अपने धर्म के अनुसार मुझे छुड़ाओ और छुड़ाओ।

तो, बचाव और मुक्ति की यह धारणा कि राजा का बचाव, उसकी धार्मिकता में उद्धार, अपना कान मेरी ओर लगाओ और मुझे बचाओ। तो, बचाए जाने की धारणा, शत्रु के हाथों से छुटकारा पाना, और यह कि ईश्वर हमारा आश्रय है। परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है।

यह दूसरी पुस्तक में नहीं है, बल्कि भजन संहिता में दूसरी जगह है। तो, किले, हमने पहले ही कई बार किले का उल्लेख किया है, लेकिन भजन 59:9 में, मुझे खेद है, 59:9 और फिर 16 से 17, भजन 59:9 और फिर 16 और 17 में। यह कहता है, हे मेरी ताकत, मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।

हे भगवान, तुम मेरे गढ़ हो। तुम हे भगवान, तुम हे भगवान मेरा गढ़ हो। फिर पद 16 तक, वह कहता है, परन्तु मैं भोर को तेरी शक्ति के विषय में गाऊंगा।

मैं तुम्हारे प्रेम का गीत गाऊंगा क्योंकि तुम मेरा गढ़ हो, संकट के समय में मेरा आश्रय हो। सुन्दर श्लोक. तुम मेरे गढ़ हो, आश्रय हो।

हममें से कितने लोगों को आश्रय की आवश्यकता है, अपनी चिंताओं और जीवन तथा हम पर दबाव डालने से बचने के लिए आश्रय की आवश्यकता है? और यह कहता है कि तू मेरा गढ़ है, संकट के समय मेरा शरणस्थान है। हे मेरी शक्ति, मैं तेरा भजन गाता हूँ।

हे भगवान, आप मेरे गढ़ हैं, मेरे प्यारे भगवान। और इसलिए, ईश्वर के बारे में यह धारणा कि वह हमारी रक्षा करता है, कि वह एक किले की तरह है। राजा अपनी प्रजा की रक्षा के लिए किले बनवाते थे।

और इसलिए, मैं यहां जो सुझाव दे रहा हूं वह यह है कि ये पीड़ितों, गरीबों और जरूरतमंदों की रक्षा करने में राजा की भूमिका के लिए उपोत्पादित रूपक हैं। वह भगवान एक चट्टान है। वह एक मजबूत मीनार है।

वह शरण है। वह एक किला है। और यह स्पिनऑफ़ से आता है, उस तरह की चीज़ें जो राजा अपने लोगों की सुरक्षा के संदर्भ में करता है।

अब हम विषय बदल रहे हैं। वही राजा है। तब राजा सिय्योन में है। वह बचाता है, वह उद्धार करता है, और वह अपने लोगों को शत्रु से बचाता है। वह तो एक चट्टान है। वह एक मीनार है। वह एक धर्मी परमेश्वर है। वह एक पवित्र भगवान है। वह एक न्यायप्रिय परमेश्वर है। उसकी करुणा, उसकी सच्चाई, उसकी धार्मिकता और उसके न्याय में दया है।

अब हम आगे बढ़ेंगे और भजनहार को पकड़ेंगे। भजनहार को किस प्रकार चित्रित किया गया है? और इसलिए, मैं सुझाव देने जा रहा हूं कि भजनहार या प्रार्थना करने वाला, भजनकार ऐसे व्यक्ति के रूप में आएगा जो भगवान के लिए जरूरतमंद है।

और वह मूल रूप से मदद के लिए भगवान से प्रार्थना करते हुए आएगा। और इसलिए, वह एक याचिकाकर्ता है। और यहाँ वास्तव में, यह चीज़ कैसे शुरू होती है।

भजनहार को ईश्वर के प्यासे के रूप में दिखाया गया है। और मुझे यह पसंद है। यदि कोई जानता है कि एडब्ल्यू टोज़र ने द परस्पूट ऑफ़ गॉड नामक पुस्तक लिखी है।

पढ़ने लायक, बहुत छोटी किताब, एडब्ल्यू टोज़र, द परस्पूट ऑफ़ गॉड। इसमें किताब के सामने पानी की धाराओं के किनारे एक हिरण की तस्वीर है। और परमेश्वर के लिए इस प्यास से यह पता चलता है कि भजनकार वह है जो परमेश्वर के लिए प्यासा है।

और इस तरह किताब 2 खुलती है। पुस्तक 2 खुलती है। यह भजन 42 है।

इस तरह किताब शुरू होती है। और इसकी शुरुआत कैसे होती है? ध्यान दें कि मैं इस बात को प्राथमिकता दे रहा हूं कि किताब कैसे शुरू होती है और किताब कैसे खत्म होती है। वे बहुत महत्वपूर्ण हैं।

जबकि जब आप किसी चीज़ की शुरुआत में आते हैं, तो कई किताबों में, मूल रूप से आपके पास एक शुरुआत, एक मध्य और अंत होता है। और इसलिए, आपको शुरुआत और अंत को देखना होगा क्योंकि यह आपको बताता है कि यह कहां से शुरू हो रहा है, यह कहां जा रहा है और मध्य इसका वर्णन करता है। तो, इस आरंभ, मध्य और अंत की संरचना, एक प्रकार की रैखिक संरचना में पुस्तकों की शुरुआत और अंत वास्तव में महत्वपूर्ण हैं।

तो, यहां बताया गया है कि पुस्तक दो की शुरुआत कैसे होती है। जैसे हिरन जल की धाराओं के लिए हांफता है, वैसे ही हे परमेश्वर, मेरी आत्मा तेरे लिए हांफती है। मेरी आत्मा भगवान की, जीवित भगवान की प्रबल कामना करती है।

मैं भगवान से मिलने कब जा सकता हूँ? क्या आपको उसी स्तोत्र का ताना याद है? भजन 42 और 43 में शत्रु उस पर यह कहकर ताना मारते हैं, कि तेरा परमेश्वर कहां है? तुम्हारे भगवन कहा हैं? और फिर भी वह कहता है, मैं परमेश्वर का प्यासा हूँ। मैं भगवान से मिलने कब जा सकता हूँ? शत्रु के तानों के प्रकाश में सुंदर, सुंदर चित्रण। और जो बात मेरे लिए दिलचस्प थी वह यह थी कि जबकि आपके पास अध्याय 42 में है, इस उद्घाटन में पानी के लिए एक हिरण की पैंट है।

तो, हे भगवान, मेरी आत्मा तुम्हारे लिए तड़पती है। भगवान के लिए प्यासा। यह बहुत रुचिपूरण है।

भजन 63:1, यह मध्य में है और यह भजन 63 से शुरू होता है। और यहां बताया गया है कि भजन 63 कैसे शुरू होता है। देखें कि क्या यह परिचित लगता है।

हे भगवान, आप मेरे भगवान हैं, मैं ईमानदारी से आपको ढूंढता हूँ। मेरी आत्मा तुम्हारे लिए प्यासी है। सूखी और थकी हुई भूमि में, जहां जल नहीं है, मेरा शरीर तुम्हारे लिये तरसता है।

तो फिर, आपको यह धारणा मिल गई है कि यह एक रेगिस्तानी जलवायु में है और कोई वास्तव में प्यास को गहराई से जानता है और कहता है, भगवान, मैं तुम्हारे लिए प्यासा हूँ। और इसलिए किताब इस तरह खुलती है। भजन 63, किताब के ठीक बीच में मृत।

बूम, आपमें फिर से भगवान के लिए प्यास जग गई है। और फिर नीचे पद्य में, यहां हमने भी उल्लेख किया है, जो शत्रु के उपहास और ताने से परेशान है। तुम्हारे भगवन कहा हैं? भजन 42 श्लोक 3 और 10।

और उसे परमेश्वर की उपस्थिति के द्वारा सांत्वना मिलती है। और यहाँ एक युगल है जहाँ वह भजन 46 श्लोक 7 और 11 में कहता है, सर्वशक्तिमान प्रभु हमारे साथ है। यह महान इमानुएल सिद्धांत है, ईश्वर हमारे साथ है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर हमारे साथ हैं। याकूब का परमेश्वर हमारा गढ़ है। वह कल्पना याद है? सेला।

फिर श्लोक 11, भजन 46.11, सर्वशक्तिमान प्रभु हमारे साथ है। याकूब का परमेश्वर हमारा गढ़ है। और आप भजन 46 में देखते हैं, यह सुंदर श्लोक छंद 7 और 11 में दो बार कहा गया है, सर्वशक्तिमान भगवान हमारे साथ हैं।

याकूब का परमेश्वर हमारा गढ़ है, सेला, ध्यानमग्न विराम। उस बारे में सोचना। तो, ये सुंदर स्तोत्र हैं।

भजनहार की शुरुआत इसी से होती है। भजनहार के पास ईश्वर के लिए प्यास और जुनून है, और वह ईश्वर के साथ रहना चाहता है। इसके बाद यह उसकी ईश्वर की उपस्थिति में जाने और रहने की इच्छा की प्यास को जोड़ता है।

यह यरूशलेम, मंदिर और सिव्योन रूपांकन से जुड़ा है जिसे हम पहले ही देख चुके हैं। मूल रूप से भजन 47, 48, विशेष रूप से 48 और फिर 50 और 51 और भजन में कई अन्य स्थान जहां सिव्योन और भगवान के शहर की ओर यह आंदोलन है और वहां भगवान की उपस्थिति में रहना चाहते हैं। इसलिए प्रार्थना करने वाला ईश्वर की उपस्थिति, उसके गढ़, ईश्वर के साथ रहना और उसके द्वारा संरक्षित होना चाहता है।

अब भजनहार के पास भावनाओं की एक श्रृंखला है। और इसलिए, मैं कुछ भावनाओं के माध्यम से चलना चाहता हूं जो भजनकार कहता है और भावनाओं की इन श्रृंखलाओं की एक श्रृंखला के माध्यम से चलना चाहता हूं जो भजनकार के पास है क्योंकि उसे दुश्मन का सामना करना पड़ता है। उसकी प्रतिक्रिया क्या है और परमेश्वर के प्रति उसकी प्रतिक्रिया क्या है? और इसलिए यहां हमारे पास भजन 42 श्लोक 10 में है, जो कहता है, मेरी हड्डियां नश्वर पीड़ा सहती हैं क्योंकि मेरे दुश्मन दिन भर मुझे चिढ़ाते हैं, तुम्हारा भगवान कहां है? और वह पहले से ही कह रहा है, मैं भगवान के साथ रहना चाहता हूं।

मुझे अतीत याद है, लेकिन अब मैं वहां नहीं हूं। और मैं वापस जाकर भगवान के साथ रहना चाहता हूं। मैं मेरोन के पानी में, डैन क्षेत्र में, माउंट हर्मन के नीचे हूं।

और मैं वहां तक पहुंच गया हूं और मैं यरूशलेम जाना चाहता हूं। मैं सिव्योन में रहना चाहता हूं जहां भगवान हैं। और दुश्मन उस पर ताने कस रहा है।

तुम्हारे भगवन कहा हैं? तुम्हारे भगवन कहा हैं? और वह कहता है, और फिर भजनकार 42.5, 11 और 43 में उत्तर देता है। इसे तीन बार दोहराया जाता है, यह परहेज, भजन 42.5, 5, भजन 42.11, 11, और भजन 43.5, 5 इन दोनों भजनों को एक साथ बांधता है। वह कहता है, हे मेरे प्राण, तू उदास क्यों है? भजनहार ने उस से पूछा, हे मेरे प्राण तू क्यों उदास हो गया है? और वैसे, यह दिलचस्प है, बहुत से ईसाइयों को हर चीज़ के साथ वास्तव में कठिन समय लगता है।

हमेशा प्रभु में आनन्दित रहें। और फिर, मैं कहता हूं आनंद मनाओ। हमें हर समय खुश, खुश, खुश रहना है।

यहाँ भजनहार कह रहा है, हे मेरे प्राण तू क्यों उदास हो गया है? तुम मेरे भीतर इतने व्याकुल क्यों हो? अपनी आशा परमेश्वर पर रखो, क्योंकि मैं अब भी उसकी स्तुति करूंगा। तो, आप देखिए कि कैसे उसकी आत्मा की यह निराश मनोदशा अंततः उसे यह कहने के लिए प्रेरित करती है, मैं अभी भी उसकी प्रशंसा करूंगा। एक समय आ रहा है जब वह कह रहा है, इसमें आशा है।

स्मरण करो जब तुम परमेश्वर की स्तुति करते थे, स्मरण करो, लौट जाओ, क्योंकि मैं अभी भी उसकी स्तुति करूंगा। भविष्य में आशा है। भविष्य में आशा है।

क्योंकि मैं अब भी उसकी, अपने उद्धारकर्ता और अपने परमेश्वर की स्तुति करूंगा। और यह उद्धारण भजन को, इन दो भजनों को एक साथ बांधता है, क्योंकि मैं अभी भी उसकी, मेरे उद्धारकर्ता और मेरे भगवान की स्तुति करूंगा। यहां कुछ अन्य भजनों की ओर जा रहे हैं।

मुझे 44 तक पहुँचने दो और मुझे यहीं 44 करने दो। 44.9 यह कहता है, परन्तु अब तू परमेश्वर से बातें करके कहता है, परन्तु अब तू ने हम को तुच्छ जाना, और नम्र किया है। अब तुम हमारी सेनाओं के साथ बाहर न जाओ।

तो यहाँ भजनहार दीन महसूस कर रहा है और भगवान द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है। और वह इसे भगवान के सामने व्यक्त करता है। वह कहता है, भगवान, मुझे लगता है कि आपने मुझे अस्वीकार कर दिया है।

भजन 44 श्लोक 24. 44 एक सांप्रदायिक विलाप है। भजन 42 और तीन एक व्यक्तिगत विलाप हैं।

और फिर भजन 44, अगला भजन हम, हम, हमारी तरह की चीज़ के साथ एक सांप्रदायिक विलाप है। तुम अपना मुँह क्यों छिपाते हो और हमारे दुःख और अत्याचार को क्यों भूल जाते हो? तो फिर, वह भगवान के पास आ रहा है और भगवान से कुछ बहुत कठिन प्रश्न पूछ रहा है। तुम अपना चेहरा क्यों छिपाते हो? दूसरे शब्दों में, वह ईश्वर की उपस्थिति में जाना चाहता है, लेकिन ऐसा लगता है जैसे ईश्वर छिप रहा है।

तुम हमारे दुःख और अत्याचार को क्यों भूल गये? 54 में नीचे, यह 55 है, वास्तव में 55:4 में हम भजनकार की पीड़ा देखते हैं। और वह यहां कहता है, मेरा हृदय भीतर ही भीतर व्यथित है। मृत्यु का भय मुझ पर आक्रमण करता है।

तो, उसे पीड़ा हुई है। वह मौत का सामना कर रहा है। वह नहीं जानता कि यह कैसे सामने आएगा और फिर भी वह मौत का सामना कर रहा है।

और इसलिए, इसमें पीड़ा भी शामिल है। भय और कम्पन ने मुझे घेर लिया है। श्लोक पाँच में, आतंक ने मुझ पर हावी हो गया है।

तो, आपके पास भय, भय और कंपकंपी है। और यह सिर्फ अच्छा नहीं है, हम इस डर को दूर नहीं करते हैं। यही कंपकंपी है।

वह इस बात से भयभीत है कि उसके साथ क्या हुआ है। और इसलिए, भजनहार अपनी इन गहरी भावनाओं को प्रकट कर रहा है। और फिर 44:19 में, वह यह कहता है, परन्तु तू ने, परमेश्वर का हवाला देकर, हमें कुचल डाला है, और हमें गीदड़ों का अड्डा बना दिया है, और हमें गहरे अंधकार से ढक दिया है।

भगवान, आपने हमें कुचल दिया है। तो यहां आपको चीजों का दूसरा पक्ष मिलता है। और फिर श्लोक 24 में, वह कहता है, तुम अपना चेहरा क्यों छिपाते हो और हमारे दुःख और उत्पीड़न को भूल जाते हो? श्लोक 25 में, वह कहता है, हमें धूल में गिरा दिया गया है।

हमारे शरीर ज़मीन से चिपके रहते हैं। और फिर, मृत्यु एक ऐसी चीज़ है, भगवान उन्हें भूल गए हैं। अब 44:25 में, वह कहता है, हमें धूल में गिरा दिया गया है।

हमारे शरीर ज़मीन से चिपके रहते हैं। वह मौत का सामना कर रहा है। और इसलिए, यह विलाप करने, डरने और कांपने का समय है।

इस भजनकार और उसके द्वारा अपनी भावनाओं को प्रकट करने में जो बात मेरे लिए आश्चर्यजनक थी उनमें से एक थी भजन 55 श्लोक 12 से 14। और यहीं वह वर्णन करता है जिसे मैं विश्वासघात कहूंगा। और अगर किसी का कोई बहुत अच्छा दोस्त रहा है और आपने किसी बहुत अच्छे दोस्त के साथ विश्वासघात महसूस किया है, तो यह भजनकार इसे बहुत अच्छी तरह से शब्दों में बयां करता है।

वह कहते हैं, अगर कोई दुश्मन मेरा अपमान कर रहा हो तो मैं इसे सहन कर सकता हूँ। यदि कोई शत्रु मेरे विरुद्ध खड़ा हो, तो मैं उससे छिप सकता था। लेकिन यह दुश्मन नहीं था।

यह दुश्मन नहीं था, बल्कि यह आप थे, मेरे जैसा आदमी, मेरा साथी और मेरा सबसे करीबी दोस्त, जिसके साथ मैंने एक बार मीठी संगति का आनंद लिया था जब हम भगवान के घर में एक भीड़ के साथ जा रहे थे। और उसे अपने सबसे अच्छे दोस्त के साथ भगवान की पूजा करना याद है जो उसका था। और अब सबसे अच्छे दोस्त ने ही उसे धोखा दे दिया है।

और वह कहता है, वह शत्रु से भी बदतर है। उसने कहा, शत्रु, मैं उससे छिप सकता हूँ। मैं उससे दूर हो सकता हूँ।

दुश्मन मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन मेरा सबसे अच्छा दोस्त, जिसके पास मैं जाता था और पूजा करता था, अब यह सबसे अच्छे दोस्त के साथ विश्वासघात है। और इसलिए, भजनहार चीजों को बहुत गहराई से महसूस करता है। और यही कारण है कि मुझे लगता है कि लोग भजन की पुस्तक को पसंद करते हैं क्योंकि भजनकार अपनी भावनाओं के बारे में ईमानदार है, वह दुश्मन के बारे में कैसा महसूस करता है, वह भगवान के बारे में कैसा महसूस करता है, खुद को त्यागा हुआ महसूस करता है, यहाँ तक कि भगवान द्वारा भी अस्वीकार कर दिया गया है।

यह बहुत, बहुत सशक्त बयान देता है। और इसलिए, यह भजन की सुन्दरताओं में से एक है। अब यह भजनकार की भावनाएँ हैं, लेकिन क्या भजनकार आवश्यक रूप से वहीं रहता है? और इसलिए, जो आपके पास है वह अनुपूरक है।

हाँ, वह ईश्वर की अस्वीकृति, ईश्वर की अनुपस्थिति, मित्र के विश्वासघात को महसूस करता है। फिर भी भजनकार है, और फिर मैं इन सभी नकारात्मक भावनाओं के साथ इसका दूसरा पक्ष लेना चाहता हूँ। मुझे यह पसंद है क्योंकि भजनहार जीवन के बारे में कोड नहीं बताता।

वह जीवन पर कोड नहीं लगाता है और हर चीज को खुश, खुश, खुश बनाता है, और बस कहता है, भगवान का पालन करें और आपका जीवन अच्छा चलेगा। भजनहार ऐसा नहीं करता। वह जीवन को उसके सभी विनाशों, निराशाओं, विश्वासघातों, अस्वीकृतियों और परित्याग की भावनाओं के साथ अनुभव करता है।

वह उन सभी चीजों को महसूस करता है, लेकिन फिर भी वह आशा पर वापस आता है और कहता है, ठीक है, यहाँ कुछ भजन 42 श्लोक 5, 11, और 43: 5 हैं। हे मेरे प्राण, तू उदास क्यों है? तुम मेरे भीतर इतने व्याकुल क्यों हो? वह इस अवस्था को स्वीकार करता है। वह इसे छुपाने की कोशिश नहीं करता। वह इसे गले लगाता है।

वह कहता है, मेरे लिए ईश्वर पर आशा रखो, आशा क्या है? मैं फिर भी उसकी, मेरे उद्धारकर्ता और मेरे परमेश्वर की स्तुति करूँगा। भजन 42 पद चार, ये बातें मुझे याद हैं। और यहीं पर भजनहार चिंतनशील होता है और वह चीजों पर चिंतन करता है और इससे उसे आशा मिलती है।

जब मैं अपनी आत्मा को बाहर निकालता हूँ तो ये बातें मुझे याद आती हैं, कि कैसे मैं उत्सव की भीड़ के बीच खुशी और धन्यवाद के नारे लगाते हुए एक भीड़ के साथ भगवान के घर तक जुलूस का नेतृत्व करता था। हे भगवान, आपके मंदिर में हम आपके अटल प्रेम पर ध्यान करते हैं। वहाँ सुंदर मार्ग।

अब हर्षित होकर, भजन संहिता 43 श्लोक चार कहता है, तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा। फिर से, उपस्थिति पर ध्यान दें। वह ईश्वर द्वारा त्यागा हुआ महसूस कर रहा है।

तुम्हारे भगवन कहा हैं? और शत्रु उस पर ताने कसता है। और अब वह कहता है, मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा, परमेश्वर के पास, मेरी खुशी और प्रसन्नता। हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा बजाकर तेरी स्तुति करूँगा।

बहुत सुन्दर वक्तव्य है। हां, उसकी आत्मा उदास है, लेकिन फिर भी वह आशा के साथ वेदी पर जाकर भगवान की स्तुति कर रहा है और संगीत बना रहा है और भगवान की स्तुति गा रहा है। फिर नीचे अध्याय 47, श्लोक छह में, यह कहा गया है, भगवान की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ, हमारे राजा की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ।

तो यह स्तुति गाने जैसा है, भगवान की स्तुति गाओ, हमारे राजा की स्तुति गाओ, भगवान की स्तुति गाओ। इसलिए वह ईश्वर की स्तुति को स्वीकार करता है, जो अस्वीकृति, परित्याग और इस प्रकार की चीजों की नकारात्मक भावनाओं से उत्पन्न होती है। वह आशा की ओर उठता है और यह आशा उसे मंदिर में, अभयारण्य में, सिंघोन में भगवान के पास वापस ले जाती है।

और फिर वह केवल भगवान की स्तुति गाने और राजा की स्तुति गाने में आनंद लेता है। तो यहां प्रशंसा जुड़ी हुई है। अब भजनहार, और अब यहीं भजनहार और शत्रु।

मैं बस मूल रूप से भजनहार और शत्रु के बीच इस संबंध और उस संबंध को दिखाना चाहता हूँ। फिर हम दुश्मन को देखेंगे और फिर हम उसे एक साथ खींच लेंगे। शत्रु से भजनहार को दरिद्रता है।

और इस प्रकार शत्रु पर ताना मारा जाता है। और वास्तव में मैं इनसे और अधिक तेजी से आगे बढ़ने जा रहा हूँ। तो, हम नहीं कर सकते, मैं उसे पढ़ने नहीं जा रहा हूँ।

हम यहां केवल चीजों का उल्लेख करेंगे। तो पहले दुश्मन क्या करता है? वह उस पर ताने कसता है। वह 42.10 में और 43 में उस पर ताना मारता है, तुम्हारा भगवान कहाँ है? और वह उस प्रश्न से उसे चिढ़ाता है।

दुश्मन ताना मारता है। शत्रु मूल रूप से श्लोक 11 और 22 में 44 में कहता है, वह कहता है, भगवान, शत्रु, वे हमें भेड़ों की तरह निगल रहे हैं। भगवान, वे हमें भेड़ों की तरह निगल रहे हैं।

हमारी मदद करें। वे हमें भेड़ की तरह वध के लिए ले जा रहे हैं। हे भगवान, हमारी मदद करो।

और फिर भजन 44 में हमें फिर से अपमानित और लज्जित किया गया है। ये विलाप भजन हैं। दरअसल, 42 एक व्यक्तिगत विलाप है।

44 हम, हम और हमारे के साथ एक सामुदायिक विलाप है। वे बदनाम हैं। शत्रु उन्हें अपमानित करता है और उन्हें लज्जित करने का प्रयास करता है।

मैं अपमान में रहता हूँ, मेरा चेहरा शर्म से ढका हुआ है। और वैसे, यह शर्म की बात है, संस्कृति का भी सम्मान करें। अमेरिका से बहुत अलग।

हम शर्म और सम्मान को उतना महत्व नहीं देते, हालाँकि हम अपने तरीके से ऐसा करते हैं। लेकिन वह यहां कहते हैं कि दुश्मन ने उन्हें अपमानित किया है और शर्मिंदा किया है और इसी तरह की चीजें की हैं। उस पर उसके शत्रुओं, अहंकारी शत्रुओं द्वारा हमला किया गया था।

वह कहते हैं, मुझ पर हमला कर रहे हैं। भजन 54 पद तीन, इन लोगों द्वारा उस पर हमला किया जा रहा है। उसे उसके सबसे करीबी दोस्तों ने धोखा दिया है, भजन 55, 12 से 14 जो हमने अभी पढ़ा।

वह ठगा हुआ महसूस कर रहा है। उसका तिरस्कार किया गया है। और 69 में, मुझे बस इसे पढ़ने दीजिए क्योंकि ये सुंदर हैं, यह कहता है, क्योंकि आपके घर का उत्साह मुझे खा जाता है।

वह परमेश्वर के घर सिंघोने जाना चाहता है। तेरा अपमान करने वालों का अपमान मुझ पर पड़ता है। जब मैं रोता हूँ और उपवास करता हूँ, तो मुझे तिरस्कार सहना पड़ता है।

जब मैं टाट ओढ़ता हूँ, तो लोग मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। दूसरे शब्दों में, जब मैं शोक मना रहा होता हूँ और बर्लेप पहनता हूँ, तो मूल रूप से लोग मेरा मजाक उड़ाते हैं और मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। जो लोग फाटक पर बैठते हैं वे मेरा उपहास करते हैं।

मैं शराबियों का गीत हूँ। फिर कुछ छंदों को श्लोक 13 से 22 में बदलें, यह भजन 69 श्लोक 13 से 22 है। लेकिन मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, हे भगवान, आपके अनुग्रह के समय में, आपके महान प्रेम में, हे भगवान, मुझे अपने निश्चित उत्तर दें मोक्ष।

मुझे कीचड़ से उबारो. मुझे डूबने मत दो। मुझे गहरे जल से उन लोगों से बचा जो मुझ से बैर रखते हैं।

और तुम यिर्मयाह को गहरे कीचड़ में देख सकते हो। ऐसा न हो कि बाढ़ का पानी मुझे घेर ले, या गहराइयाँ मुझे निगल लें, या गड़हा अपना मुँह मेरे ऊपर बन्द न कर दे। हे भगवान, अपने प्रेम की भलाई और अपनी महान दया से मुझे उत्तर दो।

मेरी तरफ मुड़े। अपने सेवक से अपना मुख न छिपाओ। मुझे शीघ्र उत्तर दो क्योंकि मैं संकट में हूँ।

पास आओ और मुझे बचा लो. मेरे शत्रुओं के कारण मुझे छुड़ा ले। तुम जानते हो कि मैं तिरस्कृत, लज्जित और लज्जित हूँ।

मेरे सब शत्रु तेरे साम्हने हैं। तिरस्कार ने मेरा दिल तोड़ दिया है और मुझे असहाय बना दिया है। मैं सहानुभूति की तलाश में हूँ, लेकिन कोई नहीं है।

सांत्वना देने वालों के लिए, लेकिन मुझे कोई नहीं मिला। अब इस श्लोक को देखें. मुझे इसे दोबारा पढ़ने दीजिए और फिर हम इस अगली कविता पर आएं।

मैंने सहानुभूति की तलाश की, लेकिन कोई नहीं थी। सांत्वना देने वालों के लिए, लेकिन वहाँ कोई नहीं था. उन्होंने मेरे भोजन में पित्त डाल दिया।

वे मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका देते हैं। यह आपको किसकी याद दिलाता है? उन्होंने मेरे भोजन में पित्त डाल दिया। उन्होंने मेरी प्यास बुझाने के लिये सिरका डाला।

ईश्वर के लिए उसकी जो प्यास है, जिसे हमने 42 और भजन 63 में देखा था। और अब वह कहता है, ईश्वर द्वारा उसकी प्यास बुझाने के बजाय, वे उसे उसके भोजन में पित्त और उसकी प्यास के लिए सिरका देते हैं। क्रूस पर यीशु की तरह बहुत भयानक लगता है, है ना? उनके साम्हने जो मेज बिछाई गई है वह फन्दा और जाल बन जाए।

और फिर अंत में, इस अपमान और चीजों को समाप्त करते हुए, उसकी प्रतिक्रिया से, मैं दर्द और संकट में हूँ। तेरा उद्धारकर्ता परमेश्वर मेरी रक्षा करे। और फिर ये क्या है? उसके पास वास्तव में ये सभी नकारात्मक चीजें हो रही हैं और वह कहता है, मैं गाने में भगवान के नाम की स्तुति करूंगा।

मैं धन्यवाद करके उसकी महिमा करूंगा। यही सच्ची प्रशंसा है. यही सच्ची प्रशंसा है.

तो अब हम भजनहार से शत्रुओं की ओर बढ़ रहे हैं। ये कौन लोग हैं, ये शत्रु जो भजन संहिता की पुस्तक में आते रहते हैं? जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, उन्हें चित्रित किया जाता है, शत्रुओं को स्वयं इन छवियों या इन रूपकों के साथ चित्रित किया जाता है। इसलिए, मैं दुश्मनों के लिए रूपकों को देखना चाहता हूँ।

ईश्वर को एक चट्टान के रूप में, एक किले के रूप में, एक शरणस्थल के रूप में और एक राजा के रूप में चित्रित किया गया है। अंततः, शत्रुओं को हिंसक जानवरों और शेरों के रूप में चित्रित किया जाता है। भजन 57.4 कहता है, मैं सिंहों के बीच में हूँ।

मैं हिंसक पशुओं के बीच में पड़ा हूँ, उन मनुष्यों के बीच जिनके दांत भाले और तीर हैं, जिनकी जीभ तलवारों की तरह तेज हैं। श्लोक छह, वही भजन, 58, मुझे क्षमा करें, 58 श्लोक छह, जो अगला सूचीबद्ध है। यह कहता है, हे भगवान, उनके मुंह में दांत तोड़ दो।

हे प्रभु, सिंहों के दाँत फाड़ डालो, सिंह शत्रु हैं। और फिर भजन संहिता 58 श्लोक तीन और चार में, यह कहा गया है, दुष्ट लोग जन्म से ही भटक जाते हैं। वे गर्भ से ही मनमौजी और झूठ बोलते हैं।

इनका विष साँपों के विष के समान होता है। तो अब वे हिंसक जानवर हैं। वे उन सिंहों के समान हैं जो भजनहार को ऐसे निगल जाना चाहते हैं जैसे इन सिंहों के सामने वध होने वाली भेड़ हो।

और अब इसे जहर के रूप में चित्रित किया गया है, साँप के जहर की तरह, जहर जो कोबरा की तरह है, उस कोबरा का जहर जिसने अपने कान बंद कर लिए हैं। और इसलिए, कोबरा जो काटता है और मारता है। और फिर इसके लिए उपयोग की जाने वाली अंतिम छवि खोजी कुत्तों की है।

तो, ये तीन मुख्य छवियाँ हैं, शेर, जहरीले साँप और घूमते कुत्ते। फिर, उन संस्कृतियों में कुत्तों, तुम्हें दूर जाना होगा। हमारी संस्कृति में लोग कुत्तों को अपने मित्रों से अधिक महत्व देते हैं।

उन संस्कृतियों में, कुत्ते जंगली कुत्ते हैं और आज अफगानिस्तान और इराक में जैसे हैं। वे शाम को कुत्तों की तरह गुर्राते हुए लौटते हैं। वे शहर में घूमते रहते हैं।

वे शाम को कुत्तों की तरह गुर्राते हुए और शहर में घूमते हुए लौटते हैं। भजन अध्याय 59 श्लोक छह और 14. अब शत्रुओं के लक्षण क्या हैं? और मैं बस इन्हें जल्दी से हिट करना चाहता हूँ।

शत्रु के लक्षण ये हैं। वे ऐसे लोग हैं जो अपनी संपत्ति पर भरोसा करते हैं। और हम बस चले जाएंगे, मैं इन छंदों को यहां नहीं पढ़ूंगा क्योंकि यह इसे बहुत लंबा खींच देगा, लेकिन वे धन पर भरोसा करते हैं।

उन्हें भगवान पर भरोसा नहीं है। भजनहार ईश्वर पर भरोसा करते हैं। उन्हें अपने धन पर भरोसा है।

दुष्टों का वर्णन किया गया है, दरअसल, भजन 50 में लगभग चार छंद हैं जहां यह दुश्मन का विस्तार से वर्णन करता है। और वास्तव में, मुझे बस इसे पढ़ने दीजिए क्योंकि यह दुष्टों और शत्रु का एक अच्छा सारांश है। यह कहता है, परन्तु परमेश्वर दुष्टों से कहता है, तुम्हें मेरी व्यवस्थाएं

सुनाने या मेरी वाचा अपने होठों पर लेने का क्या अधिकार है? क्यों? वे किस प्रकार के लोग हैं? तुम्हें मेरी शिक्षा से नफरत है.

भगवान कहते हैं कि तुम मेरे शब्दों को अपने पीछे रख लो। वे भगवान के धर्मग्रंथों को कैसे लेते हैं? उन्होंने उन्हें अपने पीछे डाल दिया। वे उनकी उपेक्षा करते हैं.

जब तुम किसी चोर को देखते हो तो उसके साथ हो लेते हो। तू अपना भाग व्यभिचारियों के हाथ में डाल देता है। तू अपना मुंह बुराई के लिये और अपनी जीभ का उपयोग छल के लिये करता है।

तो, जीभ का धोखा. तू निरन्तर अपने भाई के विरोध में बोलता है, और अपनी माँ के बेटे की निन्दा करता है। तो उनके मुंह से निन्दात्मक छल निकलता है।

और वे चोरों और व्यभिचारियों से मिल जाते हैं। वे निंदक हैं. वे बुराई का घमंड करते हैं, एक तरह से यहाँ वापस आ रहे हैं, लेकिन यह भजन 50 था जो फिर भजन 50 छंद 16 से लिया गया था।

वे बुराई पर घमण्ड करते हैं। वे जितनी अधिक बुराई कर सकते हैं, उन्हें यह उतना ही अच्छा लगता है। हे पराक्रमी पुरुष, तू बुराई पर घमण्ड करता है।

तू दिन भर घमंड क्यों करता है? तुम जो परमेश्वर की दृष्टि में तुच्छ हो। तेरी जीभ विनाश की योजना बनाती है। यह एक नुकीले रेजर की तरह है.

एक और कल्पना है. उनकी जीभ उस छूरे की तरह है जो लोगों को काटती है। तू जो छल से काम करता है, तू बुराई से प्रीति रखता है।

तुम्हें भलाई की अपेक्षा बुराई प्रिय है। क्या किसी को रोमियों में पॉल याद है? आपको उससे प्रेम करना चाहिए जो अच्छा है और उससे घृणा करनी चाहिए जो बुरा है। और यहाँ आपका शत्रु बिल्कुल विपरीत कार्य कर रहा है।

तुम्हें भलाई की अपेक्षा बुराई प्रिय है। सच बोलने की बजाय झूठ बोलना. अब यहाँ वह आदमी है जिसने भगवान को अपना गढ़ नहीं बनाया, बल्कि अपनी बड़ी संपत्ति पर भरोसा किया और दूसरों को नष्ट करके मजबूत हुआ।

शत्रु का वर्णन, छल करना, भलाई की अपेक्षा बुराई में प्रेम करना तथा दूसरों को नष्ट करना। तो फिर ये गुण हैं, ये इन शत्रुओं के गुण हैं। वे विनाश करते हैं, वे छल करते हैं।

वे अच्छाई की बजाय बुराई पसंद करते हैं। वे दूसरों को नष्ट करके मजबूत बनते हैं। उनके मुँह में छल और निन्दा है।

और इसलिए, ये भजन संहिता के बुरे लड़के हैं। अब वे जो कार्रवाई करते हैं, और फिर, हम बस इससे गुजरने जा रहे हैं। यहाँ बहुत समय हो रहा है.

वे लोगों को रोटी की तरह खा जाते हैं। तो यह उनका एक कार्य है दूसरे लोगों को निगल जाना। वे क्रूर हत्यारे हैं।

वे वास्तव में बाहर जाते हैं और नष्ट करने की कोशिश करते हैं। वे दूसरों को नष्ट करते हैं और लोगों को मारते हैं और इस प्रकार की चीजों को वहां सूचीबद्ध करते हैं। वे साजिश रचते हैं और यह एक बड़ी बात है जो वे करते हैं।

वे षडयंत्र रचते हैं और भजनहार को फँसाने के लिए जाल बिछाने की कोशिश करते हैं। वे भजनहार पर आक्रमण करते हैं। वे तलवारों और तीरों और इस तरह की चीजों से उनके विरुद्ध षडयंत्र रचते हैं।

उन्होंने अपने पैरों को फँसाने के लिये जाल फैलाया। जाल लगाने का यह विचार कुछ इस तरह है जैसे आप किसी पक्षी को फँसाने जा रहे हों या किसी जानवर को पकड़ने जा रहे हों। उन्होंने भजनहार और धर्मी के पैरों को फँसाने के लिये जाल बिछाया, और षड्यन्त्र रचे।

जैसा कि हमने ऊपर देखा है, शत्रु दूसरों का तिरस्कार, लज्जा और ताना मारते हैं। और इसलिए दूसरों को शर्मिंदा करना और ताने मारना और इस तरह की चीजें। संक्षेप में दुष्टों, दुराचारियों और शत्रु की पहचान है।

लेकिन ये तीन सम्मिश्रण हैं, दुष्ट, दुष्ट और शत्रु मूल रूप से एक ही हैं और वे अपमान में एक साथ खींचे जाते हैं, और वे धर्मी पर लांछन लगाना चाहते हैं, अपमान, लज्जा, और धर्मी पर लांछन लगाना चाहते हैं। और ये मोटे तौर पर भजन 64 श्लोक 1 से 6 इस पर सुंदर हैं। और भजन 69 श्लोक 7 से 12 और फिर 19 से 21 भी ऐसा ही है।

तो, ये दुश्मनों की तबाही दिखाने वाले महान मार्ग हैं। अब मैं इन सभी को एक साथ खींचना चाहता हूँ और इसे समाप्त करना चाहता हूँ। मोटे तौर पर हमारे पास जो था और जो हमने देखा है वह यह है कि स्तोत्र में तीन पात्र हैं।

45 और भजन 72 में राजा का रूपक, दिव्य और मानव, मानव राजा, लेकिन दिव्य ईश्वर हमारा राजा है, हमारे राजा का शहर है, और उस तरह की चीज़। हमारे परमेश्वर राजा की स्तुति करो। और फिर मूल रूप से आपके पास भजनहार या प्रार्थना करने वाला है जो जरूरतमंद है, भगवान से प्रार्थना कर रहा है और आपके पास दुश्मन है।

और मूलतः होता यह है कि शत्रु आक्रमण करता है, उसके विरुद्ध षडयंत्र रचता है, और भजनहार को निगल जाना चाहता है। तब भजनहार को जरूरत होती है और भजनकार तब मूल रूप से विलाप करता है और प्रार्थना करता है, भगवान को पुकारता है, और कहता है, भगवान, मेरी मदद करो, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। और फिर मूल रूप से भगवान राजा के रूप में बचाता है, बचाता है, उद्धार करता है, बचाव करता है, सुरक्षा करता है, और भजनहार के लिए न्याय प्रदान करता है।

भगवान ऐसे ही उद्धार करते हैं। और ऐसा करते हुए वह दुश्मन के खिलाफ लड़ता है, उसे हराता है, दंडित करता है और उसके खिलाफ न्याय करता है। और इसलिए, ये मूल रूप से तीन हैं, यही संदर्भ है।

यह वह चरित्रात्मक संदर्भ है जिसमें ईश्वर की स्तुति प्रस्तुत की जाती है जैसे कि भजनहार अब प्रस्तुत होकर ईश्वर की स्तुति करता है। और इसलिए, यह वास्तव में एक बहुत अच्छी बात है। और हम इस स्लाइड के साथ समापन करेंगे।

यह हमारी आखिरी स्लाइड होगी। यह भजनहार के शत्रु से मुक्ति के संदर्भ में है कि दिव्य राजा को स्तुति करने का व्रत प्राप्त होता है। दूसरे शब्दों में, भजनहार प्रशंसा का कारण प्रदान करते हुए स्तुति करने का संकल्प लेता है, जिसे तब भजनहार द्वारा घोषित किया जाता है क्योंकि वे अपनी ओर से सिय्योन से किए गए भगवान के शक्तिशाली कार्यों का अभ्यास करते हैं।

और मैं यहाँ केवल अध्याय 66 का श्लोक 16 पढ़ना चाहता हूँ। यह यह कहता है, भजन 66:16, 16, 16, 17, हे यहोवा के डरवैयों सब आओ और सुनो। मैं तुम्हें बताता हूँ कि उसने मेरे लिए क्या किया है।

मैं तुम्हें बताता हूँ कि उसने मेरे लिए क्या किया है। यही प्रशंसा का आधार है। प्रशंसा का आधार वह व्यक्ति है जिसने भगवान के बचाव, मुक्ति और उद्धार का अनुभव किया है।

यहाँ भी उसी प्रकार की बात है। और मुझे पहले की तरह ही आगे बढ़ने दीजिए, मिस्र से मुक्ति प्रशंसा का आधार थी। भजन 66.5 और 6 कहता है कि हम मिस्र, निर्गमन से मुक्ति के लिए ईश्वर की स्तुति करते हैं।

मिस्र से मुक्ति प्रशंसा का आधार बन जाती है। और परमेश्वर की रचना ने औपचारिक रूप से प्रशंसा प्रस्तुत की। स्वर्ग परमेश्वर की स्तुति करता है।

अब भजनहार स्वयं, मूलतः श्लोक 16 में, ईश्वर की मुक्ति के लिए ईश्वर को धन्यवाद देता है। आपने मुझे बचाया है और इसलिए भगवान उस आधार पर भगवान की कुछ स्तुति करते हैं। मुझे बस इसे पढ़ने दीजिए और हम इसी के साथ समापन करेंगे।

भजन 65 श्लोक 9 से 14 तक, उसने, परमेश्वर ने हमारे जीवन की रक्षा की है और हमारे पैरों को फिसलने से बचाया है। आपके लिए, भगवान ने हमारी परीक्षा ली। आपने हमें चाँदी की तरह परिष्कृत किया।

तू ने हमें बन्दीगृह में डाल दिया, और हमारी पीठ पर बोझ लाद दिया। आपने पुरुषों को हमारे सिर पर चढ़ने दिया। हम आग और पानी में से गुज़रे, परन्तु तू ने हमें बहुतायत के स्थान पर पहुँचाया।

मैं तेरे मन्दिर में आकर होमबलि लाऊंगा, और तेरे लिये अपनी मन्त्रों पूरी करूंगा। जब मैं संकट में था, तब मेरे होठों ने जो प्रतिज्ञा की, वह मेरे मुंह से निकली। इसलिए, जब वह मुसीबत में होता है, तो वह भगवान की स्तुति करने का संकल्प लेता है।

और यही संबंध ईश्वर की स्तुति और इस प्रकार की चीजों से है। और फिर यह, क्या हम दिव्य राजा के उद्धार की प्रशंसा के साथ-साथ मुक्ति और बचाव की अपनी कहानियों की प्रशंसा कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, क्या हम ईश्वर को उनके उद्धार और हमारे जीवन के उद्धार का अनुभव करने के लिए इतनी गहराई से अनुभव कर सकते हैं कि हम अपनी कहानी बताएं और हमारी कहानी हमें दिव्य कार्यों के लिए ईश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित करे जैसा कि उन्होंने मिस्र के पलायन में इस्राएलियों के लिए किया था। संसार की रचना में किया।

तो, भगवान ने हमारी ओर से कार्य किया है और फिर हम उसके लिए उसकी स्तुति करते हैं। तो यह इन तीन चरित्रों को दिखाता है और कैसे उन्हें भगवान की स्तुति के लिए एक साथ रखा जाता है। अगली बार, मैं जो करना चाहूंगा वह विलापों पर ध्यान केंद्रित करना है और दिखाना है कि विलाप इस वेदी की पुस्तक 2 में भगवान की स्तुति का आधार है।

हमसे जुड़ने के लिए तुम्हारा शुक्रिया। और हम अगली बार विलाप और प्रशंसा पर हमारी तीसरी प्रस्तुति की प्रतीक्षा कर रहे हैं। धन्यवाद।

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांड्ट है जो स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में ईश्वर की स्तुति पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र संख्या दो है, स्तोत्र के तीन पात्र, राजा, स्तोत्रकार और शत्रु।